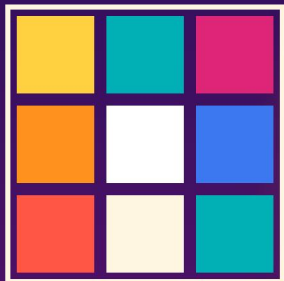


विदेह | साहित्य-आलोचना



नित नवल कुमार पवन

तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन
आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन

पइठ • डायरीक खाली पन्ना • अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह | साहित्य-आलोचना

नित नवल

कुमार पवन

तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन

आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन



गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ : नित नवल कुमार पवन

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

प्रकाशन-वर्ष : २०२६

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्प्रकाशन वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

विदेह

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना	कुमार पवन : कथा, समाज आ नैतिक प्रश्न	४
खण्ड १	पइठ : जीवितक उपेक्षा आ मृत्योत्तर भोज	६
खण्ड २	डायरीक खाली पन्ना : संस्थाक इतिहास आ आत्मसाक्ष्य	२१
खण्ड ३	अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप : व्यंग्यक मूल्यचिन्ता	३६
खण्ड ४	पइठ, स्मृति आ आत्मलेखन : तुलनात्मक समीक्षा	४९
समाहार	कथा-कर्मक साझा संरचना	५९
सन्दर्भ	सन्दर्भग्रन्थ आ उल्लेखित आलोचना	६०

कुमार पवन : कथा, समाज आ नैतिक प्रश्न

कुमार पवनक कथा-संसारमे मनुष्य प्रायः एहन चौखटपर ठाढ़ भैतैत अछि जतए ओकर इच्छा आ समाजक बनाओल नियम आमने-सामने होइत अछि। कतहु भोजक पाँति अछि, कतहु महाविद्यालयक कार्यालय, कतहु प्रतिष्ठित व्यक्तिसँ परिचय पएबाक आकांक्षा। स्थान बदलैत अछि, मुदा मूल चिन्ता एके रहैत अछि—व्यक्ति अपन मान, अपन स्वाधीनता आ अपन नैतिक विवेक कोना बचबैत अछि। एहि तीन रचनाक साथे अध्ययन कएला पर कुमार पवनक कथा-दृष्टिक बहुआयामी विस्तार स्पष्ट होइत अछि।

‘पड़ठ’ मृतात्माक स्वर्गमे पड़ठ पएबाक लोकधार्मिक विश्वासक पृष्ठभूमिमे जीवित मनुष्यक भूख आ मृत्युक बादक आडम्बरक विरोधाभास उद्घाटित करैत अछि। कनियाँ काकी जीवित रहिते अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह, तँ घर-समाजमे कोलाहल मचल; मुदा हुनक मृत्युक बाद हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठक अभिलाषासँ विशाल भोज आयोजित भेल। ‘डायरीक खाली पन्ना’ सत्ता, शिक्षा आ व्यक्तिगत आत्मलेखनक बीचक उलझनक कथा अछि। ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ लोककथनक अर्थ खोजैत-खोजैत समाजक पदलोलुपता आ बौद्धिक प्रतिष्ठाक विडम्बनाक ओर बढ़ैत अछि। तीनू रचनामे ठहाका, विस्मय, करुणा आ विडम्बना परस्पर विरोधी नहि, एकहि यथार्थक अलग-अलग स्वर बनैत अछि।

एहि पुस्तकमे तीनू रचनाक स्वतंत्र समीक्षाकेँ क्रमबद्ध कएल गेल अछि। तकर बाद ‘पड़ठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क कथा-समय, स्मृति, दृष्टिकोण, सामाजिक सत्ता आ नैतिक उत्तरदायित्वपर साहित्य-सैद्धान्तिक तुलनात्मक विवेचन अछि। ‘पड़ठ’केँ मैथिली साहित्यक ‘उसने कहा था’ कहबाक आशय कथा-वस्तु वा शिल्पक समानता नहि, साहित्यिक ख्यातिक एकटा विशिष्ट स्थिति अछि—जेना चन्द्रधर शर्मा गुलेरीक साहित्यिक पहिचानमे ‘उसने कहा था’ अत्यन्त प्रसिद्ध अछि, तहिना मात्र एकटा कथा सेहो कोनो कथाकारक नामक प्रतिनिधि कृति बनि सकैत अछि। ‘पड़ठ’क प्रसंगमे ई उपमान एही सीमित अर्थमे ग्रहण करबाक चाही।

समीक्षाक उद्देश्य पात्रक दोष-गुणक फैसला सुनाएब नहि, वरन् रचनाक भीतर जे अनेक आवाज, स्मृति, सामाजिक गणित आ अधूरा प्रश्न अछि तकरा स्पष्ट करब थिक। कथा जखन निश्चित उत्तर नहि दैत, तखन ओकर मौन सेहो अर्थवान होइत अछि। कुमार पवनक रचनासभ एहि प्रकारक असुविधाजनक, मुदा आवश्यक, पाठकीय सक्रियता माँगैत अछि।

खण्ड १

पड्ठ

जीवितक उपेक्षा, मृत्योत्तर भोज आ स्वर्ग-पड्ठक विडम्बना

रचनाक अन्तरंग

कुमार पवनक ‘पड्ठ’ मैथिली दीर्घकथाक एहन उदाहरण अछि जाहिमे मृत्योत्तर भोजक तैयारी, ओकरा घेरेन अफरा-तफरी आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रदर्शन ग्रामीण समाजक असमान संरचनाकें अनावृत करैत अछि। कथाक मार्मिक विरोधाभास ई अछि जे कनियाँ काकी जीवित अवस्थामे अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह तँ एहि आग्रहपर कोलाहल मचल; मुदा हुनकर मृत्युक बाद आत्मैकें स्वर्गमे ‘पड्ठ’ भेटबाक लोकविश्वासक निमित्त विशाल भोजक आयोजन होइत अछि। कथामे सरवन बाबूक आयोजन, ओहि आयोजनक सम्बन्धमे उठैत बहस, कनियाँ काकीक जीवनक उपेक्षा, परिवारक सम्बन्ध, उत्तराधिकार आ वंशक अपेक्षा, विद्यालय आ आगाँक जिनगीक सपना, सार्वजनिक भीड़ तथा भोजनक क्रम सभ एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि। शीर्षकक मूल आशय भोजस्थलमे सामान्य प्रवेश नहि, मृतात्माक स्वर्गमे धार्मिक स्वीकार्यता पएबाक अभिलाषा अछि; एकर व्यंग्य जीवितक भूखक अनसुनी माँग आ मृतकक नामपर प्रचुर व्ययक बीच प्रकट होइत अछि। एहि अनुशीलनमे कथन-विधान, संवाद, व्यंग्य, स्त्री-दृष्टि, जाति-वर्गसम्बन्ध, अन्नक प्रतीक आ नैतिक असुविधाक विवेचन कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त विदेहमे उपलब्ध शिशु-लोकसाहित्य, बाललोककथा, चित्रकथा आ आधुनिक बाल-उपन्याससम्बन्धी प्रकाशनक आधारपर विधागत तुलना प्रस्तुत अछि। एहि तुलनाक उद्देश्य दीर्घकथाकें बाल-साहित्य घोषित करब नहि, बल्कि पाठक-सम्बोधन, कथाभाषा आ सामाजिक यथार्थक प्रस्तुति-प्रणालीक अन्तर स्पष्ट करब थिक।

प्रस्तावना: मिथिलाक मृत्योत्तर भोज आ जीवितक प्रति दायित्व

मैथिली कथासाहित्यक ग्रामीण संसारमे दलान, आँगन, पोखरि, बाट, खेत, बजार आ भोज-भात खाली भौगोलिक वा सांस्कृतिक स्थान नहि होइत अछि; ओ समाजक नियम, प्रतिष्ठा, दूरी आ टकरावकें दृश्य बनबैत अछि। ‘पड़ठ’ एहि सामान्य अनुभवकें असामान्य कथात्मक विस्तार दैत अछि। रचनामे मृतात्माक स्वर्गमे पड़ठ पएबाक लोकधार्मिक आकांक्षासँ जुड़ल भोज सामुदायिक आयोजनक रूप लैत अछि। एहि आयोजनक पृष्ठभूमिमे कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक एकटा छोट माँग पड़ल अछि—बेटीक बेटा लेल भोजन—जाहिपर झाल हंगामाक स्मृति भव्य मृत्योत्तर भोजकें नैतिक रूपसँ असहज बना दैत अछि। गामक अन्हार, बाट, आवाजाही आ जनसमुदाय एही उलटबाँसीकें दृश्य रूप दैत अछि।

‘पड़ठ’कें मात्र खाद्य-संकटक रिपोर्ट वा जातिप्रथाक एकरेखीय अभियोग मानि लेब ओकर बहुस्वरात्मकता कम करब होएत। एकर मूल व्यंग्य धार्मिक अनुष्ठानक विरोधमे नहि, जीवित अवस्थामे उपेक्षित मनुष्यक प्रति दायित्व बिसरि मृत्युक बाद उदारता प्रदर्शित करबामे अछि। लेखक भोजक दृश्यसँ पारिवारिक स्मृति धरि, लोकक सार्वजनिक मुद्रासँ ओकर निजी क्लेश धरि, हास्यास्पद व्यवहारसँ करुण प्रसंग धरि अबैत-जाइत छथि। एहिसँ कथा एकटा निश्चित खलनायकक कथा नहि रहि सामुदायिक जीवनक विखण्डित विवेकक दस्तावेज बनैत अछि। प्रश्न उठैत अछि—मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल उत्सुक समाज जीवित कनियाँ काकीक सरल माँगकें मानवीय सहजतासँ स्वीकार किएक नहि कऽ सकल?

शीर्षक ‘पड़ठ’: मृतात्माक स्वर्ग-स्वीकृति आ नैतिक विडम्बना

एहि कथामे ‘पड़ठ’क अर्थ भोजक पाँतिमे पैसब नहि, मृत्यु उपरान्त आत्माकें स्वर्गमे स्थान वा स्वीकार्यता भेटबाक लोकधार्मिक धारणा अछि। कनियाँ काकी जखन जीवित छलीह, तखन अपन

बेटीक बेटा लेल कनेक भोजनक आग्रह कएने छलीह; ओहि छोट आवश्यकता परो परिवार-समाजमे हंगामा मचल। मृत्युक बाद हुनका स्वर्गमे ‘पड़ठ’ भेटय, एहि विश्वासक अनुरूप विशाल भोज आयोजित कएल गेल। ई दू दृश्य शीर्षकक प्राण अछि—जीवितक छोट भूखक प्रति कठोरता आ मृतकक परलोकक हितमे प्रचुर भोजनक प्रदर्शन। एहि अर्थमे ‘पड़ठ’ धार्मिक क्रियाक नाम होइतहुँ मनुष्यक वास्तविक सेवा आ कर्मकाण्डी प्रतिष्ठाक बीचक दूरी मापबाक कसौटी बनैत अछि।

शीर्षकक व्यंग्यार्थ एहि प्रश्नमे निहित अछि जे कनियाँ काकीक जीवनकालमे हुनकर बेटीक बेटा लेल अन्न देब एतेक कठिन किएक छल, जखनकि हुनकर मृत्यु उपरान्त आत्माक स्वर्गमे पड़ठ सुनिश्चित करबाक अभिलाषासँ भोजक विशाल प्रबन्ध सम्भव भऽ गेल। कथामे धर्मविश्वास अपन स्थानपर अछि; आलोचनाक धार ओहि व्यवहारपर अछि जे परलोकक कल्याण लेल खर्च करैत अछि, मुदा जीवितक कनेक भूखकँ कोलाहलक कारण बना दैत अछि। पाँति, भात, भीड़ आ सामाजिक मान एहि केन्द्रीय विरोधाभासक दृश्य माध्यम छथि, शीर्षकक प्राथमिक शब्दार्थ नहि।

कथा-संसारक सामाजिक मानचित्र

कथाक एक धुरी सरवन बाबूक मृत्योत्तर भोजक आयोजन आ ओकरा घेरने सार्वजनिक समाज अछि। आयोजनक क्षेत्रमे भोजनक सुविधा, निमन्त्रण, चूल्हा-भानस, कारिन्दा, स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति आ जनसमुदायक अपेक्षा एक-दोसरपर निर्भर करैत अछि। दोसरी धुरी कनियाँ काकीक जीवनक उपेक्षा अछि: जीवित अवस्थामे बेटीक बेटा लेल हुनकर कनेक भोजनक माँगपर उठल कोलाहल, पुत्र-पुतोहु आ परिवारक सम्बन्ध, गुँजा, प्रतिष्ठा आ स्नेहक अभाव। एहि दुनू धुरीक बीच मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठक कामना आ जीवित सदस्यक प्रति कर्तव्यक अन्तर खुलैत अछि। सार्वजनिक भोज आ निजी परिवार एतय अलग क्षेत्र नहि; एकहि समाजक नैतिक मूल्यक दू रूप छथि।

कथा कतहु-कतहु राघव, सहयोगी, ठेकेदार, आयोजक आ आन पात्रक मतभेदक सहारे ग्रामीण समुदायकँ बहुवचनमे देखबैत अछि। कोनो एक पात्रक मुँहसँ लेखकीय निर्णय सुनाएब लेखकक

एकमात्र उपाय नहि अछि। लोक कखनो बहस करैत अछि, कखनो अनुमान लगबैत अछि, कखनो डरैत अछि, कखनो आनक दुखक सम्बन्धमे उदासीन रहैत अछि। ई जनसमूह नीरस प्रसंगभूमि नहि, कथाक सक्रिय चरित्र अछि।

कथा-विवेचन: आरम्भक सामूहिक दृश्य

प्रारम्भिक प्रसंगसभक दृश्य-विन्यासमे अन्हार, बाटक गति, गामक चर्चा, भोजक प्रतीक्षा आ दलानक गतिविधि एक संग प्रवेश करैत अछि। दृश्य किछु क्षण लेल स्थिर रहितो लोकक बोलचाल आ व्यस्ततासँ गतिमान बनल रहैत अछि। मुख्य घटनाकें तुरत पूरा खोलि देबाक बदला लेखक सामाजिक तापमान बढ़बैत छथि। एहि शिल्पमे पाठक समाचार नहि, परिवेशक भीतर बनैत स्थिति अनुभव करैत अछि। पहिने गाम देखाइत अछि, तकर बाद भोज, तकर बाद भोजपर निर्भर मनोवृत्तिसभ।

एहि हिस्सामे मृत्योत्तर भोज एकटा 'समाज-प्रयोग' सन अछि: सामूहिक धार्मिक कर्तव्य पूरा करबाक नामपर सभ जुटैत छथि, मुदा सभ समान दृष्टिसँ नहि देखैत छथि। जे अनुष्ठान मृतात्माक कल्याणक निमित्त कएल जाइत अछि, ओही ठाम पद, प्रतिष्ठा आ अहंकार अपन स्वर प्रकट करैत अछि। कथावाचक सामाजिक सम्बन्धक जटिलता समझेबाक लेल लम्बा सिद्धान्त नहि लिखैत; एक गोटेक बोलचाल, दोसरक प्रतिक्रिया आ तेसरक तैयारी सँ क्रमशः सामाजिक संरचना बनबैत छथि। जीवनकालक ओहि छोट आग्रहपर मचल विवादक स्मृति एहि सामूहिक कर्मकाण्डक चमककें प्रशङ्कित करैत अछि।

कथा-विवेचन: भोजक भीड़, पराक्रमक विडम्बना

एहि प्रसंग धरि भीड़ केवल संख्यात्मक नहि रहैत; ओ व्यवहारक मूल्यांकन करबाक पैमाना बनैत अछि। मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठक उद्देश्यसँ आयोजित भोज आ सार्वजनिक मर्यादाक बिच अन्तर बढ़ैत अछि। लोक जे सभ्यता, धर्म, परम्परा आ अतिथि-सत्कारक बात करैत अछि, भोजनक पाँतिक

प्रश्नपर ओकर धैर्य आ संयम संकटमे पड़ैत अछि। कथामे ‘पराक्रम’क स्वर आ भोजक वास्तविक व्यवहारक बेमेल व्यंग्यकें जन्म दैत अछि। सच्चा पराक्रम जीवित असहायकें संग देब होएबाक चाही; मुदा एतय परलोकक हितक भव्य प्रबन्ध एकटा साधारण भोजनक आग्रहपर मचल हंगामाक ठीक विपरीत ठाढ़ अछि।

एहि प्रसंगकें अतिरंजना मात्र मानब उचित नहि। लेखक सामूहिक उपभोगक भीतर अधिकार-बोध आ अपमान-बोधक द्वन्द्व देखबैत छथि। मृत्योत्तर भोजमे परोसल अन्न अनुष्ठानिक दायित्वक प्रदर्शन सेहो बनैत अछि; कनियाँ काकीक जीवनकालक माँगमे वैह अन्न बेटीक बेटाक भूख मेटबाक साधन छल। ककरा पहिने बैसब, ककर स्वागत, ककरा लेल व्यवस्था आ ककरा लेल प्रतीक्षा—ई सभ सामाजिक-राजनीतिक प्रश्न थिक। लेखक व्यंग्यक टोकरीमे ई चारू स्तर राखैत छथि।

कथा-विवेचन: आगि-पानि-लोह-पाथर आ सामूहिक अफरा-तफरी

एहि प्रसंगमे परिवेशक तीव्रता बढ़ैत अछि। बाट, रेल-पटरी, दौड़धूप, आशंका आ फैलैत खबरक प्रसंग सभ एक-दोसरमे गुँथल अछि। दृश्य-संयोजनमे अगिला क्षण की होएत से अनिश्चितता बनैत अछि। एहन समयमे व्यक्ति सभक सामाजिक मुखौटा खसैत अछि—किओ बचबाक चिन्तामे, किओ सूचना-दर-सूचनाक पाछाँ, किओ अपन घर-परिवारक सन्दर्भमे घटना समझबाक चेष्टामे। संकट व्यक्तिगत नहि रहि सामूहिक चेतनाक परीक्षण बनैत अछि।

कथावाचक घटना आ खबरक बिच दूरी राखैत छथि। लोक जे सुनैत अछि, से सम्पूर्ण सत्य नहियो भऽ सकैत अछि; मुदा समाचारक असर वास्तविक रहैत अछि। एहि बिन्दुपर व्यंग्य करुणासँ टकराइत अछि। अनुष्ठानक लेशमात्र व्यवधानपर शोर करनिहार समुदाय जखन असुरक्षाक सामनासँ घबराइत अछि, तखन कथाक प्रश्न उठैत अछि—समाज अपन सामूहिक विवेकक संरक्षण कोना करत? एहि खण्डक महत्व केवल उत्तेजना उत्पन्न करब नहि, सामूहिक सम्बन्धक नाजुकता उजागर करब अछि।

कथा-विवेचन: कनियाँ काकीक माँग, उपेक्षा आ पीढ़ीक दूरी

एहि प्रसंगमे कनियाँ काकीक जीवन-स्मृतिसँ कथाक केन्द्र बदलैत अछि। एतय कथा मृत्योत्तर भोजक सामूहिक दृश्यसँ निजी दुलार, पारिवारिक दायित्व आ अधूरी आकांक्षाक क्षेत्रमे पैसैत अछि। जीवनकालमे अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगबाक काकीक इच्छापर मचल हंगामा परिवारक मूल्यव्यवस्थाक वास्तविक चेहरा खोलैत अछि। एहि कारणेँ हुनकर दुख मात्र भावुक प्रसंग नहि, कथानकक नैतिक केन्द्र अछि। जे समाज मृत्यु उपरान्त आत्माक स्वर्ग-पड़ठक हेतु भव्य भोज करैत अछि, ओ जीवित स्त्रीक मामूली ममतामय इच्छाकेँ सम्मान किएक नहि दऽ सकल—ई प्रश्न कथा भरि गूँजैत अछि।

पढ़ाइ-लिखाइ, भविष्यक आशा, घरक सहयोग आ बदलैत पीढ़ी सम्बन्धी प्रसंग ‘पड़ठ’केँ केवल एक दिनक मृत्योत्तर भोज-कथा रहबासँ रोकैत अछि। वर्तमानक आयोजनक संग हुनकर जीवनकालक अपमान, स्नेह, अभाव आ संघर्षक स्मृति जुड़ैत अछि। एहि कारणेँ कथा समयक सीध रेखा तोड़ैत अछि: मृत्युक बादक भोजक दृश्य जीवित व्यक्तिक नासुनल माँगकेँ बेर-बेर सोझाँ अनैत अछि। परलोकक ‘पड़ठ’क कामना आ इहलोकक उपेक्षा एकहि कथात्मक समयमे आमने-सामने आबि जाइत अछि।

कथा-विवेचन: खिड़की, आकांक्षा आ मनोवैज्ञानिक तनाव

एहि प्रसंगक पाठमे खिड़कीसँ देखबाक, भीतर सँ बाहर ताकबाक आ बाहरी घटनाकेँ अपन दुखसँ जोड़ि बुझबाक अनेक संकेत अछि। ‘खिड़की’ एहि रूपमे दृश्य आ दूरीक बीचक सीमा बनि उठैत अछि। जनसमुदायक कोलाहल बाहर अछि; भीतर व्यक्ति अपन असफल इच्छा, अधिकारक अपेक्षा आ सम्बन्धक अर्थ टटोलैत अछि। कनियाँ काकीक स्मृति आ परिवारक युवापीढ़ीक चिन्ता एहि सन्निकटतामे मिलैत अछि।

एहि खण्डक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि अछि जे पात्रक मनमे चलैत प्रश्न कथावाचकक पूर्ण घोषणा बनि नहि जाइत। किछु प्रसंगमे पात्र अपन निर्णयक पक्षमे तर्क करैत अछि, किछुमे ओ स्वयं

प्रश्नसँ घेरल अछि। एहन अस्पष्टता मनोवैज्ञानिक प्रामाणिकताक पक्षमे जाइत अछि। तथापि पाठक-स्तरपर एतऽ कथाक गति धीम पड़बाक सम्भावना बनैत अछि; कारण बहुचर्चित अन्तर्मन्थन सार्वजनिक कथानकसँ किछु दूर लऽ जाइत अछि। ई शिल्पक शक्ति आ जोखिम दुनू थिक।

कथा-विवेचन: गुँजा, उत्तराधिकार आ पारिवारिक असमानता

एहि प्रसंगमे गुँजा आ परिवारक भिन्न सदस्यलोकनिक सम्बन्धसंघर्ष कथा-समाजक दोसर पैघ पंक्ति बनैत अछि। पुत्र, बेटी, पुतोहु, माय आ परिवारक ‘अपन’ कहल जाएबला लोक सभकेँ समान भावनात्मक महत्व नहि भेटैत अछि। जे व्यक्ति भविष्यक आस जगबैत अछि, वैह पारिवारिक गणनाक भीतर कखनो वस्तु, कखनो दायित्व, कखनो विवादक कारण बनि जाइत अछि। लेखकक दृष्टि एतऽ बाहरक भोजसँ भीतरक ‘बैटवारा’ पर जाइत अछि।

एहि प्रसंगकेँ स्त्री-जीवनक व्यापक दबावसँ जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि। स्त्रीक भूमिका प्रायः ममताक अनन्त भण्डार, दोसरक अपेक्षा पूरा करनिहार आ घरक सम्मान ढोअनिहार रूपमे निर्धारित अछि; मुदा ओकर अपन इच्छा अथवा थकान कतेक मान्यता पबैत अछि, से अनिश्चित अछि। कथाक आन्तरिक विषाद एहि विरोधाभाससँ उत्पन्न होइत अछि। गुँजाक प्रसंग स्त्रीक भविष्यमे आशाक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा ओ आशा स्वयं पितृसत्तात्मक सम्बन्धक सीमासँ मुक्त नहि अछि।

कथा-विवेचन: जीवनक भोजन-माँगसँ मृत्योत्तर भोज धरि

कथाक मार्मिकता भोजनक मात्रा आ ओकर समयक विचित्र असमानतामे निहित अछि। कनियाँ काकी अपन जीवनकालमे बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह; एहि माँगपर हंगामा मचल। मुदा हुनकर मृत्यु उपरान्त स्वर्गमे आत्माक ‘पड़ठ’ लेल विशाल भोजक प्रबन्ध भेल। एतय भात जीवनक न्यूनतम आवश्यकता सेहो अछि आ मृत्योत्तर कर्मकाण्डक सार्वजनिक साधन सेहो। जकरा

जीवितक भूख मेटबाक लेल सहजतासँ देल जा सकैत छल, वैह अन्न मृतकक परलोकक स्वीकृति चाहैत समाजमे प्रचुर मात्रामे परोसल गेल। ई विरोधाभास कथा-कर्मक गहिर नैतिक प्रश्न अछि।

समापनमे रोगग्रस्त इजोरिया, अन्हार, आवाज आ ग्राम्य वातावरणक वर्णन कथाक व्यंग्यकेँ गम्भीर बनबैत अछि। मृत्योत्तर भोजक खेप आ ओकर प्रतीक्षामे रहनिहार लोकक विवरण एहन संरचना बनबैत अछि जाहिमे कर्मकाण्ड सम्पन्न भेलाक बादो जीवित मनुष्यक प्रति कर्तव्यक प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि। कनियाँ काकीक स्वर्ग-पड़ल लेल कएल प्रबन्धक पाछाँ जीवित अवस्थाक छोट माँगक अपमान प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। कथाक अन्त समाधानक शिलालेख नहि, नैतिक प्रश्नक अवशेष अछि।

एहिसँ कथाक समय दू धुरीपर घूमैत अछि: एक दिस कनियाँ काकीक जीवनक भूख, ममता आ उपेक्षा; दोसर दिस मृत्युक बाद हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ल लेल कएल विशाल भोज। ई विरोधी दृश्य कथानकक सजावट नहि, समाजक मूल्यक्रमपर सूक्ष्म टिप्पणी थिक। जीवनकालमे टारल गेल साधारण दायित्वकेँ मृत्योत्तर भव्यतासँ की सचमुच पूरा कएल जा सकैत अछि—कथा एही प्रश्नकेँ पाठकक मनमे जीवित रखैत अछि।

भोजक राजनीति: मृतात्माक पड़ल आ जीवितक उपेक्षा

मिथिलाक मृत्योत्तर भोजकेँ कथामे लोकधार्मिक विश्वास, परिवारक प्रतिष्ठा आ सामुदायिक अपेक्षाक संग देखल गेल अछि। मृतात्माक स्वर्ग-पड़लक अभिलाषा अनुष्ठानक घोषित प्रयोजन अछि; मुदा ककरा मान देल जाए, के कतय बैसत, ककरा प्रतीक्षा, ककरा आमन्त्रण आवश्यक—एहि सभ प्रश्नक दबाव रहैत अछि। ‘पड़ल’क आयोजनक विडम्बना एतबे नहि जे पाँति असमान अछि, बल्कि ई जे जीवनकालमे कनियाँ काकीक बेटीक बेटा लेल कनेक अन्नक माँगपर हंगामा भेल, आ मृत्युक बाद हुनका लेल विशाल भोज सम्भव भेल।

एतय सामूहिक उपभोगकेँ अपने-आप करुणामय एकता घोषित करबाक भ्रम टूटैत अछि। विशाल भोजक संसाधन अनुष्ठानिक उत्साहक प्रमाण थिक; मुदा जीवित मनुष्यक प्रति न्याय आ संवेदना

अलग कसौटी अछि। कथा धार्मिक मान्यताक प्रामाणिकता सिद्ध वा असिद्ध करबाक ग्रन्थ नहि; ओ प्रश्न उठबैत अछि जे स्वर्गमे मृतात्माक पड़ल लेल सक्रिय समाज हुनकर जीवनकालक मामूली इच्छापर असहिष्णु किएक भेल। एहि दृष्टिसँ ककर बात सुनल गेल, ककर आवश्यकता मानल गेल आ ककर पीड़ा उपेक्षित भेल—सत्ताक सूक्ष्म रूप कथाक वास्तविक चिन्ता अछि।

स्त्री-पक्ष: कनियाँ काकीक जीवित उपेक्षा आ मृत्योत्तर सम्मान

कथाक सार्वजनिक स्तरपर पुरुष-पात्रसभक वाणी, आयोजन, विवाद आ अधिकारक भाषा अधिक सुनाइत अछि; मुदा निजी पीड़ाक गहराइ कनियाँ काकीक माध्यमसँ खुलैत अछि। काकीक जीवनकालक ममतामय भोजन-माँगपर मचल कोलाहल बतबैत अछि जे घरक भीतर स्त्रीक इच्छा केहन सहजतासँ अस्वीकार कएल जाइत अछि। हुनक मृत्यु उपरान्त हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठक निमित्त आयोजित भव्य भोज एहि उपेक्षाक प्रतिलोम बनि ठाढ़ होइत अछि। घरक भीतर न्यायक अभाव बाहरी अनुष्ठानक अलग घटना नहि; दुनू एकहि सामाजिक मूल्यव्यवस्थाकें उद्धाटित करैत अछि।

कनियाँ काकीक अनुभव कथाक मानवीय विवेकक कसौटी अछि। आयोजनक प्रतिष्ठा, भोजनक प्रचुरता आ जनसमुदायक शोरक तुलना जीवनकालमे हुनका भेटल व्यवहारसँ कएल जाए तँ मूल्यक्रम बदलि जाइत अछि। मृतात्माक स्वर्गमे पड़ल लेल विशाल प्रबन्ध करब समाजक लोकविश्वासक अंग भऽ सकैत अछि, मुदा स्त्रीक जीवनकालक कनेक आग्रहपर हंगामा करब मानवीय दायित्वक विफलता अछि। एहि विडम्बनामे स्त्रीक पीड़ा आयोजनक विरुद्ध मौन प्रतिवाद बनैत अछि।

एकटा आलोचनात्मक सीमा सेहो देखब आवश्यक अछि। पाठकक सहानुभूति गहरएबाक लेल कथामे मातृत्व आ त्यागक प्रसंग बार-बार अबैत अछि; फलतः स्त्री-अधिकारक स्वतंत्र स्वर कतेक प्रत्यक्ष रूपसँ व्यक्त भेल अछि, से प्रश्न बचल रहैत अछि। कथाक नैतिक बोध स्त्रीक दुखकें केन्द्रमे

अनैत अछि, मुदा ओकर निर्णय-सामर्थ्यक सम्पूर्ण विस्तार सभ ठाम समान स्पष्ट नहि अछि। एहि सीमाक स्वीकार समीक्षा केँ आस्थापरक प्रशंसासँ बचबैत अछि।

भाषा, संवाद आ व्यंग्यक कथाशिल्प

‘पड़ठ’क भाषा संवादबहुल अछि। बोलबाक चालि, प्रश्नोत्तर, आशंका, व्यग्रता, दोसरक कथन दोहराएब आ एकहि बातपर विभिन्न व्यक्तिक प्रतिक्रिया—ई सभ कथा-प्रवाह बनबैत अछि। लेखक एकटा मानकीकृत व्याख्यान देबाक बदला अनेक लोक-स्वरक सहारासँ घटना खोलैत छथि। एहि कारणेँ भोजक तैयारी कखनो जनसभा सन, कखनो घरक झगड़ा सन, कखनो अफवाह फैलनिहार चौक सन लगैत अछि। भाषामे ठेठ ग्रामीण अनुभवक दबाव कथाक प्रामाणिकता मजबूत करैत अछि।

शैलीक एक विशेषता व्यंग्य आ करुणाक तीव्र फेरबदल थिक। जे प्रसंगपर पाठक पहिने हँसैत अछि, ओकर भीतर झाँकलाक बाद वैह प्रसंग असहज बना दैत अछि। भीड़, घोषणा, पराक्रम, अनुशासन, भय आ अकारण प्रतिष्ठाक चिन्ता पर लेखकक वक्र दृष्टि अछि। मुदा व्यंग्यक लक्ष्य भूखल मनुक्ख वा मृत्योत्तर अनुष्ठानक श्रद्धाकेँ हँसब नहि; ओकर लक्ष्य ओ मूल्यगत उलटबाँसी अछि जाहिमे काकीक जीवनकालक साधारण भोजन-माँग विवाद बनल, आ हुनकर मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़ठ लेल भव्य भोज समाजक कर्तव्य मानल गेल।

शिल्पक किछु जोखिम सेहो अछि। बहुतेक संवादक लगातर विन्यास आ एक प्रसंगसँ दोसरक द्रुत आवागमन नव पाठक लेल पात्र-स्थिति चिन्हब कठिन बना सकैत अछि। किछु ठाम लम्बा मनोविश्लेषण सार्वजनिक घटनाक तीव्र गतिसँ भिन्न लय लैत अछि। मुदा एहि असमान लयकेँ पूर्ण दोष मानल नहि जा सकैत; किएक तँ कथा स्वयं असमान सामाजिक समयक रचना अछि—भीड़ तत्क्षण निर्णय चाहैत अछि, पीड़ित मन दीर्घ स्मृतिमे भटक रहल अछि।

चित्रक उपस्थिति: पाठक संग समानान्तर दृश्य-भाषा

मूल कथांश सभमे अनेक श्वेत-श्याम चित्र अछि। सजावटी घेरा, आँखि, नारी-मुख, पशु-आकृति, हाथी आ लोकचित्रक लयबद्ध विन्यासक कारणेँ चित्र कथासँ स्वतंत्र सौन्दर्यात्मक स्तर रचैत अछि। विशेषतः आँखिक आवर्ती रूपकेँ देखबाक, देखाएब आ देखितो नहि देखबाक समस्या संग जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि। लोकचित्रक भरल-सघन रूप कथाक भीड़ आ जटिल सम्बन्धक दृश्य-समान्तर उत्पन्न करैत अछि।

चित्रकेँ कथाक प्रत्येक दृश्यक यथार्थवादी प्रतिलिपि मानल ठीक नहि। ताहिमे सांकेतिकता प्रधान अछि। गद्य-पाठ सामाजिक सम्बन्धक विरोधाभास शब्दमे खोलैत अछि, तँ चित्रक रेखा प्रतीकात्मक घनत्व दैत अछि। बाल-पोथीमे चित्र कथाबोध सुगम बनबैत अछि; ‘पड़ठ’मे चित्र मूलतः अर्थ-परत आ मूड रचैत अछि। एहि भिन्न भूमिकाक कारणेँ चित्र रहलामात्रसँ ‘पड़ठ’ बालसाहित्यक वर्गमे नहि आबि जाइत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहास: उपलब्ध विदेह-सामग्रीक आलोकमे

मैथिली बाल-साहित्यकेँ आधुनिक प्रकाशित चित्रकथा सँ आरम्भ मानब इतिहासक अपूर्ण पाठ होएत। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क २०१० मे विदेह अङ्क ५० मे प्रकाशित ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ मे शिशुक पालन-पोषण, खेल आ ज्ञानोपयोगी लोक-अभिव्यक्तिक विस्तार देखाओल गेल अछि। एहि लेखमे घर-आँगन, लोकगीत, लोरी, खेलक मौखिक परम्परा आ पीढ़ीदर-पीढ़ी चलैत भाषिक स्मृतिक महत्त्व रेखांकित अछि। ई सामग्री स्पष्ट करैत अछि जे बाल-साहित्यक इतिहास केवल लेखकक नाम आ प्रकाशन-वर्षक सूची नहि, मौखिक परम्परासँ प्रकाशित पोथी धरि संक्रमणक अध्ययन सेहो थिक।

डॉ. योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ विदेह अङ्क ७६ (२०११) मे लोककथाक संग्रह, बालमनक अपेक्षा, कथाभाषाक सहजता आ संकलन-कार्यक महत्त्वपर केन्द्रित

अछि। लेखक रामलोचन ठाकुरक ‘मैथिली लोककथा’क १९८३क पहिल संस्करण आ २००६क विस्तृत संस्करणक उल्लेख करैत छथि, संगहि मौखिक कथाभाषाकें सुरक्षित राखबाक प्रश्न उठबैत छथि। ओ प्रीति ठाकुरक चित्रकथाकें लोककथा आ नव पाठक-वर्गक बीचक सेतु मानैत छथि। एहि आधारपर बाल-वाङ्मयक विकास मौखिकता, संकलन, पुनर्लेखन, चित्रण आ समालोचनाक परस्पर प्रक्रिया रूपमे देखल जा सकैत अछि।

विदेहक बाल-साहित्य सूचीमे प्रीति ठाकुरक मौलिक ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ (२००८), ‘मैथिली चित्रकथा’ (२००९), ‘मिथिलाक लोकदेवता’ (२०१०) आ ‘विद्यापतिक पुरुष परीक्षा’ (२०१२) संग कतेको अनूदित बाल-पोथीक क्रम देल अछि। एहिसँ २०००क दशकक पहिल भागसँ चित्र, लोक-आख्यान आ बालपाठकक सम्बन्धमे नवीन प्रकाशन-प्रयासक एकटा झलक भेटैत अछि। दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (विदेह अङ्क ११६, २०१२) एहि चित्रकथा प्रयासक समीक्षा करैत अछि।

नव परिप्रेक्ष्यमे विदेह अङ्क ४४७ (१ अगस्त २०२६) मे गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बहुविध बाल-उपन्यास, लोकनायक-आख्यान, शिक्षणकथा आ आधुनिक कल्पनाशील रचनाक समीक्षा-मानदण्डपर चर्चा करैत अछि। ई लेख बाल-साहित्यक आलोचनाकें केवल ‘नीति-शिक्षा’ धरि सीमित नहि राखि पाठक-वय, कथन, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व आ सौन्दर्यात्मक कसौटी धरि विस्तारित करैत अछि। एहि इतिहासक समग्रता लेल पुरान लोकपरम्परा, १९८०क दशकक संकलन, २००८–२०१२क चित्र-पोथी आ आधुनिक आलोचनात्मक संहिताकें एक संग देखबाक आवश्यकता अछि।

ई कालक्रम सम्पूर्ण मैथिली बाल-साहित्यक अन्तिम इतिहास नहि, विदेहक एहिठाम जँचाएल चयनित स्रोतसँ बनल तुलनात्मक परिदृश्य अछि। आन ग्रन्थक प्रकाशन-प्रथमतः अथवा ककरो साहित्यिक प्राथमिकता लेल व्यापक पुस्तकालयीय सूची अनिवार्य होइत; ताहि प्रकारक असत्यापित दावा एहि निबन्धमे नहि कएल गेल अछि।

‘पड़ठ’ आ बाल-कथा: समान सांस्कृतिक संसार, अलग पाठक-सम्बोधन

‘पड़ठ’ आ मैथिली बाललोककथाक बीच समानता पहिने भाषा आ परिवेशमे भेटैत अछि: गाम, परिवार, लोक-बोलचाल, भोजन, स्मृति, जीविका आ पारस्परिक निर्भरता। बालकथा सेहो एहि सभसँ विषय ग्रहण करैत अछि। मुदा दूनूक कथात्मक प्रयोजन समान नहि। बाललोककथामे संक्षिप्त कथानक, दृश्यात्मक स्पष्टता, कुतूहल, पुनरावृत्ति आ उग्रानुकूल भाव-व्यवस्था प्रायः महत्त्वपूर्ण होइत अछि; ‘पड़ठ’मे बहुस्तरीय सामाजिक विडम्बना, धीम अन्तर्मन्थन, तनावपूर्ण आक्षेप, बोझिल सम्बन्ध आ खुलल नैतिक निष्कर्ष प्रमुख अछि। एहि कारणेँ रचनाकेँ बिना रूपान्तर सीधे बालोपयोगी पाठ घोषित करब समुचित नहि।

विशेष तुलना भोजनक प्रतीकमे अछि। शिशु-लोकगीतमे दूध-भात, चूड़ा, सोहारी आ भोजनक सामग्री प्रायः दुलार, पालन आ जीवनक उत्सवसँ जुड़ैत अछि; ‘पड़ठ’मे बेटीक बेटा लेल माँगल कनेक अन्न परिवारक विवादक कारण बनैत अछि, जखनकि मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल प्रचुर भोज सम्भव होइत अछि। एकहि सांस्कृतिक वस्तु अलग प्रसंगमे अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि— बालकक लेल अन्न तत्काल स्नेह आ पालनक आवश्यकता, मृत्योत्तर भोजमे वैह अन्न अनुष्ठानिक प्रतिष्ठाक चिह्न। साहित्यक आलोचना एहि दुनू अर्थक नैतिक अन्तर देखबैत अछि।

चित्रक तुलना सेहो उपयोगी अछि। दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षानुसार बाल-चित्रकथा लोकपरम्परा चिन्हबाक आ कथाक अर्थ बुझबाक सहायक माध्यम अछि। ‘पड़ठ’क चित्र एतबे सरल दृश्य-संकेत नहि दैत; गद्यक जटिल भावभूमि संग प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया रचैत अछि। एहि तुलनासँ स्पष्ट होइत अछि जे कृतिक बालोपयुक्तताक निर्णय चित्र उपस्थित अछि कि नहि, एहि एकमात्र कसौटीपर नहि; कथानक, भाषिक घनत्व, सामाजिक हिंसाक प्रस्तुति आ पाठकक विवेचन-क्षमता सभकेँ देखब आवश्यक अछि।

रचनाक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

‘पड़ठ’क पहिल उपलब्धि अछि—ओ मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल आयोजित भोजकें समाजक मूल्यव्यवस्थाक लघु प्रतिरूप बना दैत अछि। दोसर उपलब्धि, काकीक जीवित अवस्थाक मामूली भोजन-माँगपर मचल कोलाहल आ मृत्युक बादक भव्य आयोजनक तीक्ष्ण विरोध। तेसर उपलब्धि, सामूहिक दृश्य आ निजी क्लेशक आवागमन; एहिसँ चरित्रलोकनिक अनुभव केवल घटनात्मक नहि, ऐतिहासिक आ भावनात्मक बनैत अछि। चारिम उपलब्धि, व्यंग्यक बहन्ने नैतिक प्रश्न खोलब, बिना अविलम्ब उपदेश देलहुँ। पाँचम उपलब्धि, लोकभाषाक सक्रियता आ चित्रक सांकेतिक उपस्थिति। समापनक खुलापन पाठककें आत्मपरीक्षण करबैत अछि।

एहि उपलब्धिसभक संग आलोचनात्मक प्रश्न रहैत अछि। बहुस्वरक कारणें कखनो कथावाचकक दृष्टिकें पात्रक मतसँ अलग चिन्हब श्रमसाध्य अछि; किछु संवाद पाठकीय एकाग्रता पर अधिक दबाव दैत अछि। स्त्रीक दुखक चित्रण प्रभावशाली होइतहुँ ओकर सक्रिय स्वनिर्णयक विस्तार अपेक्षाकृत सीमित रहि सकैत अछि। सामाजिक वर्ग आ जातिसम्बन्धी संकेत बहुत तीक्ष्ण अछि, मुदा प्रत्येक पात्रक भिन्न मनोवैज्ञानिक स्थिति एकहि विस्तारसँ रेखांकित नहि। आरम्भिक भीड़क गति आ मध्यक पारिवारिक स्मृति बीचक संक्रमण सेहो अलग पाठकक लेल अलग प्रकारसँ सफल वा कठिन साबित भऽ सकैत अछि।

एकर अन्तक नैतिक तनावक कमजोर व्याख्या ई होएत जे कथामे ‘सभ लोक खराब’ अछि। लेखक एहन सार्वभौमिक निन्दा नहि गढ़ैत छथि। कथाक समुदायमे सहयोगक सम्भावना, दया, पारिवारिक आशा आ आत्मीयता सेहो उपस्थित अछि; संकट ई अछि जे एहि सम्भावनासभकें सामाजिक प्रतिष्ठाक ढाँचा निरन्तर कम करैत अछि। एहि सूक्ष्म विरोधकें बचौने राखब कथा-विवेचनक मुख्य शर्त अछि।

उपसंहार: परलोकक पड़ठ आ इहलोकक अधूरा दायित्व

‘पड़ठ’क दीर्घकथात्मक शक्ति मृतात्माक स्वर्गमे पड़ठ पएबाक धार्मिक अवधारणाकेँ जीवित मनुष्यक प्रति नैतिक दायित्वक कसौटी बनबामे अछि। कनियाँ काकी जीवित रहिते अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह, मुदा ओहि माँगपर हंगामा मचल; हुनक मृत्युक बाद आत्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल विशाल भोज आयोजित भेल। एहि दू घटनाक विरोधे कथाक शीर्षककेँ मार्मिक अर्थ दैत अछि। पाठक भोजक पाँति देखैत-देखैत मनुष्यक मूल्यक पाँति देखय लगैत अछि। सरवन बाबूक आयोजन सार्वजनिक दृश्यक केन्द्र बनैत अछि, मुदा कनियाँ काकीक जीवनानुभव ओकर नैतिक प्रतिलोम बनैत अछि।

कथाक क्रममे अन्हार, भोजक व्यवस्था, भीड़, आशंका, पारिवारिक विषाद, जीवनकालमे कनेक अन्नक आवश्यकता आ मृत्योत्तर स्वर्ग-पड़ठक प्रबन्ध जे दू समयकेँ जोड़ैत अछि, से मैथिली ग्रामीण जीवनक एकरेखीय रोमानीकरणकेँ अस्वीकार करैत अछि। गाम सुन्दर स्मृतिक स्थान होइतहुँ विरोधाभाससँ भरल सामाजिक व्यवस्था थिक। लेखकक व्यंग्य एहि दोहरी सत्यकेँ एक संग देखबैत अछि—श्रद्धाक सार्वजनिक उच्चारण आ जीवितक प्रति संवेदनाक अभाव।

बाल-साहित्यक तुलनात्मक इतिहास एहि निष्कर्षकेँ आओर स्पष्ट करैत अछि: एकहि लोकसंस्कृति नेनाकेँ लोरी, कुतूहल आ चित्रकथा दैत अछि, आ प्रौढ़ पाठककेँ व्यंग्य, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक आत्मपरीक्षण। ‘पड़ठ’क विशिष्टता दोसर प्रकारक पाठकीय अनुभवमे अछि। एतय जीवनमे बेटीक बेटा लेल माँगल भोजन आ मृत्यु उपरान्त स्वर्ग-पड़ठ लेल कएल भोजक बीचक दूरी धार्मिक कर्मकाण्डसँ बेसी जीवित मनुष्यक प्रति न्यायक प्रश्न बनि उठैत अछि।

डायरीक खाली पन्ना

शिक्षा-संस्था, सत्ता, आत्मलेखन आ नैतिक विवेक

रचनाक अन्तरंग

कुमार पवनक ‘डायरीक खाली पन्ना’ एकटा एहन दीर्घ-कथा अछि जाहिमे व्यक्तिगत आत्मलेखनक कामना आ सार्वजनिक संस्थागत जीवनक दबाव एक-दोसरासँ निरन्तर टकराईत रहैत अछि। केन्द्रमे महाविद्यालयक प्राचार्य छथि—व्यवस्थापनक सफलता, प्रतिष्ठाक आकांक्षा, राजनीतिक सम्पर्क, भय, मोहभंग आ आत्मचिन्तनक बीच हेलान-डोलान करैत व्यक्ति। कथा डायरी लिखबाक आदतिसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा आगाँ महाविद्यालयक भवन-निर्माण, शिक्षक-नियुक्ति, परीक्षा, छात्र-राजनीति, स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तिक हस्तक्षेप आ सार्वजनिक आरोप-प्रत्यारोपक गुम्फन बनि जाइत अछि। एहि कथामे रिक्त पन्ना असलमे लेखन-असमर्थताक साधारण बिम्ब नहि, अपितु सत्ता-संलग्न मनुष्यक आत्मसाक्ष्यक संकट थिक। एहि अध्ययनमे एहि कथांशक क्रमिक पाठविश्लेषण, चरित्र-परिकल्पना, कथन-भंगिमा, व्यंग्य, भाषिक युक्ति आ चित्र-संयोजनक परीक्षा कएल गेल अछि। बाल-साहित्यक इतिहासक चर्चा तुलनात्मक सीमा-बोधक संग प्रस्तुत अछि: मूल रचना बाल-कथा नहि, तथापि विद्यालयीय नैतिकता, छात्र-कर्तृत्व आ सचित्र कथनक प्रश्नपर एकर बाल-साहित्य विमर्शसँ उपयोगी संवाद बनैत अछि।

प्रस्तावना: रिक्तताक दोहरा अर्थ

डायरी सामान्यतः निज अनुभवक क्रमबद्ध अभिलेख मानल जाइत अछि। ओकर पन्ना व्यक्तिगत समयक साक्षी बनबाक अपेक्षा राखैत अछि: के देखल, कोन निर्णय भेल, की गलती कएल गेल, आ

व्यक्ति अपन मनमे की लुकेने रहल। कुमार पवन एहि सहज मान्यताकें उलटि दैत छथि। हुनक कथा-नायक लेखनक प्रतिष्ठामे विश्वास करैत छथि, मुदा जे जीवन वास्तवमे हुनका लिखबाक सामग्री उपलब्ध करबैत अछि, सेहि जीवनक सामाजिक-प्रशासनिक जटिलता हुनका लिखबासँ दूर करैत चलि जाइत अछि। एहि अर्थमे शीर्षकक रिक्तता केवल कागजक नहि, आत्मज्ञान, नैतिक स्थिरता आ सत्यनिष्ठ अभिलेखक रिक्तता सेहो अछि।

रचनाक प्रारम्भमे ओकर विधा ‘दीर्घ-कथा’ देल अछि। ई विधा-सूचना महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पात्रसभक आगमन, परिस्थिति-परिवर्तन आ सत्ता-संघर्षक फैलाव छोट कथाक एकक घटनासँ आगाँ जाइत अछि, मुदा संरचना उपन्यासक स्वतन्त्र विस्तृत संसार नहि रचैत। एकर दोहरावयुक्त, प्रश्नाकुल आ संवादप्रधान गद्य प्राचार्यक चित्तगत उधेड़बुन आ संस्थागत अव्यवस्थाकें समानान्तर चलबैत अछि।

प्रस्तुत आलोचनाक केन्द्रीय स्थापना ई अछि जे कथा व्यक्तिक दू गोटा विपरीत इच्छाक सामना करबैत अछि: अपन जीवनकें अर्थपूर्ण ढंगसँ दर्ज करबाक इच्छा आ सार्वजनिक छविक रक्षार्थ जीवनक असुविधाजनक सत्यकें टारि देबाक प्रवृत्ति। साहित्यिक प्रतिफल एहि विरोधक भीतरसँ उपजैत अछि; नैतिक उपदेश लेखकक घोषित निष्कर्ष नहि बनि, पात्रक अनुभूतिमे व्यंजित होइत अछि।

कथाक विकास: मुख्य प्रसंगसभ

डायरीक आदति आ आत्मप्रतिष्ठाक स्वप्न

कथा डायरी लिखबाक अभ्यासक परिचयसँ प्रवेश करैत अछि। उच्च विद्यालयक शिक्षकक निजी लेखन, अपन जीवनकें कखनो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक रूपमे देखबाक उत्सुकता आ लेखनक सामाजिक मान्यता—ई तीनू सूत्र आरम्भमे जुड़ैत अछि। एतए डायरी एकान्तक सहचर होयबाक संग भविष्यमे स्वयंकें पढ़ल जाएब योग्य बनएबाक साधन सेहो बनैत अछि। प्राचार्यक उपस्थितिसँ लेखकीय आकांक्षा सामाजिक सफलताक आकांक्षासँ जुड़ि जाइत अछि।

निर्माणकार्य, प्रतिष्ठा आ लेखनक अवरोध

महाविद्यालयक भवन-विस्तार, छात्र-समूह, स्थानीय सम्पर्क आ प्रशासनिक योजनाक विस्तारमे प्राचार्यक दिनचर्या भरैत जाइत अछि। समयक अभाव मात्र शारीरिक व्यस्तता नहि रहि जाएत अछि; कामक प्रतिष्ठा सेहो निजी अभिलेखसँ अधिक आकर्षक बनैत अछि। प्राचार्य अपन दिनक अनुभवकेँ दर्ज करबाक वचन दैत छथि, मुदा कागजपर आत्मसाक्ष्य टिकैत नहि। एतहि सँ रिक्त पन्नाक समस्या चरित्रगत समस्या बनैत अछि।

महत्वाकांक्षा, गणना आ आत्मविश्वासक दरार

सार्वजनिक मान्यता आ निजी संकोचक संघर्ष तीव्र होइत अछि। प्राचार्य संस्था, विश्वविद्यालय, छात्र आ प्रभावशाली लोकक सम्बन्धमे अवसर देखैत छथि। कथनमे बेर-बेर आशंका, तुलना, अनुमान आ प्रश्नक प्रवेश हुनक भीतरक अस्थिरताकेँ उद्घाटित करैत अछि। युक्तिसंगत निर्णयक बदला अपन भविष्यक सम्बन्धमे अनुमान अधिक महत्त्वपूर्ण भऽ उठैत अछि।

अधिकारक प्रमाण आ अपमानित होयबाक भय

प्रतिष्ठाक रक्षाक प्रश्न सिधा प्रशासनिक अधिकारसँ जुड़ैत अछि। प्राचार्यकेँ डर अछि जे लोक हुनका ओहि ऊँच स्थानपर नहि मानत जतए ओ स्वयंकेँ देखैत छथि। व्यक्तित्वक स्वायत्तताक अपेक्षा बाहरी स्वीकृतिक आवश्यकता प्रबल भऽ जाइत अछि। एतए कथाक हास्य करुण अर्थ ग्रहण करैत अछि, कारण सत्ता पाबियो मनुष्य भीतरसँ आश्वस्त नहि भऽ सकैत अछि।

प्रभावशाली व्यक्तिसँ भेंट आ आत्म-संयमक परीक्षा

राजनीतिक-सामाजिक प्रभावक केन्द्रक संग प्राचार्यक निकटता कथाक रङ्ग बदलैत अछि। बृन्दावन बाबू सन व्यक्तिसँ सम्बन्ध केवल अवसरक माध्यम नहि, मूल्य-निष्ठाक जाँचक अवसर सेहो बनैत अछि। स्नेह, भय, जोखिम आ स्वार्थक बीच प्राचार्यक प्रतिक्रियासभमे विरोधाभास देखाइत अछि। चित्रांकन एहि प्रसंगक मनोदशाकेँ शब्दक समानान्तर व्यंग्यमय रूप दैत अछि।

कारण खोजबाक भटकाव

कारण आ परिणामक सम्बन्ध बुझबाक बेचैनी प्राचार्यकेँ निजी नैतिक प्रश्नसँ सामाजिक आ दार्शनिक विमर्श धरि पहुँचबैत अछि। धर्म, राजनीति, क्रान्ति आ विद्यालयीय जीवनक विचार एक-दोसरामे घुलि जाइत अछि। सतही जानकारी आ निश्चित उपाय नहि भेटबाक कारण खोज निरन्तर प्रश्नक रूप धरि लौटैत अछि। एहि बिन्दुपर दीर्घ-कथा आत्मचिन्तन आ वैचारिक व्यंग्यक दोसाँधपर ठाढ़ अछि।

उषा जी आ नव सम्भावनाक क्षण

विश्वविद्यालयीय वातावरणमे उषा जीक उपस्थितिसँ प्राचार्यक ध्यान क्षणिक रूपेँ अपन रक्षात्मक मुद्रा सँ हटैत अछि। ओ अपन व्यवहार, पढ़ाइ-लिखाइ आ सामाजिक सम्बन्धकेँ फेर सँ सोचबाक प्रेरणा पबैत छथि। मुदा ई अनुभूति कोनो स्थायी नैतिक परिवर्तनक प्रमाण नहि; कथा एकरा सम्भावनाक रूपमे राखैत अछि। स्त्री-पात्रक भूमिका नव दृष्टिक संकेत बनैत अछि, तथापि ओकर अपन स्वायत्त जीवन पर्याप्त विस्तार नहि पबैत।

सार्वजनिक नैतिकता आ निजी असुरक्षा

धार्मिक दृश्य, सामाजिक पहचान, परिसरक गतिविधि आ पर्चा-वितरणक प्रसंग प्राचार्यक आश्वासनकेँ फेर चुनौती दैत अछि। लोकधर्म, प्रतिष्ठा आ निन्दाक भय एकठाम आबैत अछि। प्राचार्यक प्रतिक्रियामे ई स्पष्ट होइत अछि जे संकटकेँ ओ पहिने अपन मान-सम्मानक क्षतिक रूपमे देखैत छथि, ओकर संस्थागत सत्यक रूपमे बादमे। एहि प्रसंगक चित्र एकान्त आ ऊहापोहक लाक्षणिक सहचर अछि।

महाविद्यालय, अफवाह आ आरोपक राजनीति

प्राचार्यक परिसर-सम्बन्धी योजनासभक संग एकटा उत्तेजक प्रसंग जोड़ल गेल अछि, जाहिमे सार्वजनिक नैतिकताक प्रश्न संस्था-विरोधी प्रचारक साधन बनैत अछि। अफवाह, संकेत, वस्तु आ आरोपक बीचक दूरी जानि-बुझि धुँधल राखल जाइत अछि। एहि प्रसंगक साहित्यिक महत्त्व

सनसनीमे नहि, बल्कि एहि तथ्यमे अछि जे तथ्य-जाँचसँ पहिने संदेह संस्थागत प्रतिष्ठा निर्धारण करए लगैत अछि।

परीक्षा-व्यवस्था, नियुक्ति आ प्रभावक कारोबार

महाविद्यालयक भीतर परीक्षा, मूल्यांकन, पद, पदोन्नति आ संरक्षणक संसाधन-सम्बन्धी जाल खुलैत अछि। बल्लि बाबू सन स्थानीय प्रभुत्वशाली व्यक्तिक प्रभाव संस्थाक आन्तरिक निर्णयमे प्रवेश करैत अछि। शिक्षा-प्रशासनक औपचारिक प्रक्रिया आ व्यक्तिगत अनुग्रहक बीच स्पष्ट तनाव देखल जाइत अछि। कथा केवल भ्रष्ट व्यक्तिक निन्दा नहि करैत; ओ देखबैत अछि जे संस्थागत व्यवस्था कोना निजी सौदाक भाषा ग्रहण करैत अछि।

राजनीतिक संरक्षणक बदलैत गणित

गुट, चुनाव आ संरक्षणक फेरबदलसँ प्राचार्यक पुरान सुरक्षा कमजोर होइत अछि। जकर निकटता काल्हि लाभकारी छल, वैह आइ असुरक्षाक कारण बनि सकैत अछि। एहि अनिश्चिततामे प्राचार्यक स्वाभिमान आ भयक द्वन्द्व तीव्र होइत अछि। सत्ता एक स्थिर संरक्षक नहि, बदलैत समीकरणक नाम अछि—ई तथ्य प्रसंगशृंखलासँ उभरैत अछि।

दबाव, समझौता आ भयक पुनरागमन

परीक्षा आ महाविद्यालयीय स्वायत्तताक प्रश्नक बीच शिक्षक, अधिकारी आ स्थानीय प्रभावक टकराव बढ़ैत अछि। प्राचार्य कखनो स्पष्ट विरोधक भाषा अपनबैत छथि, कखनो सम्भावित दण्डक कल्पनासँ विचलित भऽ जाइत छथि। एहि आवागमनसँ पात्र निश्चल नायक नहि रहैत; ओकर मानवीय दुर्बलता आ नैतिक हिम्मत दुनू संगे देखाइत अछि।

छात्र-आन्दोलन आ सार्वजनिक छविक विघटन

छात्र-समूह, नारा, परिसरक अफरातफरी आ बाहरी सक्रियताक कारण महाविद्यालय प्रशासन नाटक-सदृश सार्वजनिक रंगमंच बनैत अछि। प्राचार्यक विरुद्ध उठल आवाज सभ एकहि अर्थ नहि राखैत—किछु प्रतिरोध, किछु अवसरवाद, किछु अफवाह। कथाक महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे

यथार्थक निर्णय कोन आधारपर होए, जखन सभ पक्ष अपन छवि बनबए चाहैत हो। व्यंग्यचित्र सत्ता-प्रतिष्ठाक थरथराहटकेँ दृश्य रूपमे पुष्ट करैत अछि।

आत्मरक्षाक आखिरी प्रयास आ खाली पन्नाक वापसी

एहि प्रसंगमे मामला सम्भारबाक योजना, छात्र-राजनीति, प्रतिष्ठाक बेचैनी आ आत्मलेखनक फेर उपस्थित प्रश्न एकठाम होइत अछि। कथा सरल समाधान नहि दैत; ओ पाठककेँ प्राचार्यक आत्मपरीक्षाक अधूरापनक सोझाँ छोड़ैत अछि। डायरी फेर कथा-भूमिपर अबैत अछि, मुदा दिनसभक दबाव ओकरा भरल नहियो होय देत। शीर्षक एतए घटनाक सार नहि, समूची कथाक नैतिक रूपक बनि उठैत अछि।

कथानकक निर्माण: निजी डायरीसँ सार्वजनिक संस्थाक कथा धरि

पहिल दृष्टिमे कथा एकटा व्यक्तिक मनोवृत्तिक उतार-चढ़ावक लेखा जकाँ लगैत अछि; नजदीक सँ देखला पर ई संस्थाक सामूहिक आत्मकथा बनि जाइत अछि। आरम्भमे जकरा लिखनिहारक एकान्त मानल गेल छल, क्रमशः ओकरा भीतर छात्र, शिक्षक, प्रबन्धक, राजनीतिक कार्यकर्ता, स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति, पत्रकारिताक प्रभाव आ घर-परिवारक आशंका प्रवेश करैत अछि। प्राचार्यक चेतनाक केन्द्रीयता कथा-विस्तारकेँ बाँधैत अछि, मुदा समूचा संसार हुनक वशमे नहि रहैत। एहि विरोधमे रचनाक गति निहित अछि। (, २५-३०)

घटना-क्रमक एकटा महत्वपूर्ण विशेषता अछि: कोनो समस्या पूरा समाप्त नहि होइत अछि। भवन-निर्माण एकटा सामाजिक उपलब्धि होइतहुँ राजनीतिक दावेदारी जगबैत अछि; राजनीतिक सम्पर्क प्रतिष्ठा बढ़बैतहुँ निर्भरता उत्पन्न करैत अछि; परीक्षा आ पदक औपचारिक व्यवस्था व्यक्तिगत हस्तक्षेप लेल छिद्र खोलैत अछि; छात्रक मुखरता प्रतिरोधक साधन होइतहुँ अन्य दबावक माध्यम बनि सकैत अछि। एहि प्रकारेँ कथामे स्थिर विजयक बदला अनवरत प्रतिस्थापन अछि।

कथा अनेक उपकथाक साधने मुख्य विषय आगू बढबैत अछि, मुदा प्रत्येक उपकथा डायरीक प्रश्नक संग समान दूरी पर नहि अछि। किछु ठाम प्रशासनिक विवरण अपेक्षाकृत अधिक स्थान लैत अछि आ आत्मलेखनक प्रतीक पाछाँ सरकि जाइत अछि। ई शिल्पगत सीमा सेहो थिक, कारण पाठककें मूल रूपक फेर सँ सक्रिय करबाक काज स्वयं करए पड़ैत अछि। फेरो एहि विस्तारक लाभ ई जे एकटा आत्ममुग्ध व्यक्तिक संकट अन्ततः शिक्षा-संस्थाक संरचनात्मक संकट बनि देखाइत अछि।

प्राचार्यक व्यक्तित्व: स्वायत्त मनुष्य कि प्रतिष्ठाक बन्दी?

प्राचार्य ई कथाक केन्द्रबिन्दु छथि, मुदा पारम्परिक अर्थमे निष्कलंक नायक नहि। हुनक भीतर प्रशासनिक दक्षता, व्यवहारक चातुर्य, उन्नतिक स्वप्न, स्वार्थ, प्रतिष्ठाभय, दार्शनिक जिज्ञासा आ नैतिक संकोच एकहि संग उपस्थित अछि। ओ कखनो व्यवस्था बदलबाक इच्छुक लगैत छथि, कखनो व्यवस्थाक लाभान्वित उपभोक्ता। एहि द्वैधक कारणे हुनक आलोचना सम्भव होइत अछि आ सहानुभूति सेहो।

प्राचार्यक भीतरी संसार मुख्यतः भविष्यक सम्भावित संकटसँ संचालित अछि। हुनका वास्तविक घटनासँ जतेक भय नहि, ओतबे भय ई अछि जे घटना हुनक मान-प्रतिष्ठापर की असर करत। अपन मानक प्रमाण बेर-बेर बाहरी व्यक्ति, पद, संरक्षक, संस्थागत घोषणा आ सार्वजनिक स्वीकारसँ खोजब मनुष्यकें पराधीन बनबैत अछि। एतए कथा प्रतिष्ठाक सामाजिक पूँजी आ आत्मसम्मानक अन्तर्विरोध देखबैत अछि।

हुनक आत्मपरिवर्तनक क्षणसभ वास्तविक छथि, मुदा क्षणिक। उषा जीक संसर्ग हो वा स्वार्थसँ ऊपर उठबाक विचार—एक बेर नव मार्गक सम्भावना बनैत अछि, फेर परिचित शक्ति-समीकरण ओकरा ढाँपि दैत अछि। परिणामतः लेखक नायकक मोक्ष-गाथा नहि लिखैत; अधूरी परिवर्तनशीलताक कथा लिखैत छथि। एहि अधूरापनक कारणे अन्तकें नैतिक दृष्टिँ विश्वसनीय मानल जा सकैत अछि।

सहायक पात्र आ सत्ता-संरचनाक अनेक मुख

शिक्षक-पात्र आ डायरी लिखबाक आरम्भिक अभिलाषा कथा भीतर लेखकीय दृष्टिक बीज रोपैत अछि। एहि भूमिकाक महत्त्व केवल सूचना देब नहि, अपितु प्राचार्यक प्रशासनिक सफलताकें व्यक्तिगत अनुभव लिखबाक आवश्यकताक सोझाँ रखब अछि। लेखन आ पद, ई दुनू प्रतिष्ठाक माध्यम बनबाक आकांक्षा राखैत अछि, मुदा दुनूक नैतिक कसौटी भिन्न अछि। लिखित अभिलेख तथ्यक सामना करबैत अछि; पदक व्यवहार सुविधाजनक विस्मृतिक अवसर दैत अछि।

बृन्दावन बाबू आ बल्लि बाबू सन प्रभावशाली पात्र सत्ता-व्यवस्थाक दू अलग स्वरूप देखबैत छथि। एक दिस सम्पर्क, निकटता, विचार-विमर्श आ प्रतिष्ठाक सांकेतिक मान्यता अछि; दोसर दिस पद, चुनाव, हस्तक्षेप, संरक्षण आ प्रत्यक्ष दबावक व्यवहारिक संसार अछि। प्राचार्य एहि दुनूकें अपन विरुद्ध आ अपन पक्षमे एकहि समय उपयोगी बुझैत छथि। ई पात्र केवल दुष्ट व्यक्तिक छवि बनि समाप्त नहि होइत, संस्थागत निर्भरता बुझबाक उपकरण बनैत छथि।

छात्रसभ कथामे अनेक बेर समूहक रूपमे उपस्थित छथि। हुनक आन्दोलन वास्तविक प्रश्न उठा सकैत अछि, मुदा बाहरी राजनीतिक शक्तिक उपयोगक आशंका सेहो अंकित अछि। एहि द्विविधाकें एकपक्षीय ढंगसँ छात्र-विरोधी कथन बुझब उचित नहि; बरु एतए प्रश्न उठैत अछि जे छात्रक स्वतंत्र आवाज आ ओकर नामपर सक्रिय प्रतिनिधिक आवाजमे भेद कोना कएल जाए। एतहि कथा विश्वविद्यालयीय लोकतन्त्रक कठिन विषयक दिस बढैत अछि।

उषा जीक प्रवेश संस्थामे स्त्रीक बौद्धिक उपस्थिति आ पुरुष-प्रधान सत्ता-जालक बीच एकटा सम्भावित वैकल्पिक संवादक संकेत दैत अछि। तथापि हुनक अपन विचार-विकास, पेशागत संकट वा स्वतंत्र निर्णयक विस्तृत निरूपण सीमित अछि। परिणामतः कथा हुनका माध्यमसँ प्राचार्यक परिवर्तनपर अधिक प्रकाश दैत अछि, हुनक स्वयंभू जीवनपर कम। ई सीमाक स्पष्ट पहचान करब रचनाक न्यायसंगत मूल्याङ्कनक भाग अछि।

कथावाचक, भाषा आ व्यंग्यक गतिशीलता

एहि दीर्घ-कथाक कथावाचन बाहरी वर्णन आ पात्रक भीतरी विचार-प्रवाहक बीच लगातार आबाजाही करैत अछि। कथावाचक घटना कहैत छथि, तुरन्त पात्रक अनुमान, आशंका, अपमान-बोध वा आत्मतर्कमे उतरि जाइत छथि। एहि युक्तिसँ पाठककेँ प्राचार्यक मनक दूरी आ निकटता दुनू भेटैत अछि: ओकरा संग चलबाक अवसर भेटैत अछि, परन्तु ओकर आत्मछल सेहो देखाइत अछि। एतए व्यंग्य व्यक्तिपर सीधा प्रहार करबाक बदला पात्रक दृष्टि आ वस्तुस्थितिक फाँकसँ उत्पन्न होइत अछि।

भाषामे खण्डित वाक्य, विरामक दीर्घ आवर्तन, बीच-बीचमे उठैत प्रश्न आ आत्म-संशोधनक लय महत्त्वपूर्ण अछि। विचार पूरा होएबासँ पहिने दोसर आशंका आ जाइत अछि। एहि दूटैत-जुड़ैत वाक्य-रूपसँ प्राचार्यक अनिश्चितता अभिव्यक्त होइत अछि। पाठककेँ आरम्भिक हास्य बादमे बेचैनीक रूपमे भेटैत अछि, कारण जे वाक्य-भंगिमा पहिने व्यक्तिक चंचलता छल, वैह आन्तरिक असुरक्षाक चिह्न बनि उठैत अछि।

कथाक गद्य कखनो वैचारिक चर्चामे प्रवेश करैत अछि। धर्म, राजनीति, शिक्षण आ सामाजिक मान्यताक प्रसंगसभ प्राचार्यक निजी चिन्ताक संग ठेलमठेल करैत अछि। एहि विस्तारक परिणाम दूहरा अछि—एक दिशि विचारक समृद्धि, दोसर दिशि कथात्मक कसावटमे असमानता। विशेषतः मूल कथा जखन घटना देखएबाक अपेक्षा तर्कक अधिक वाक्य रचैत अछि, तखन पाठकीय गति मन्द पड़ि सकैत अछि। मुदा ई शिथिलताकेँ बिना देखनहि केवल दुर्गुण कहल नहि जा सकैत; पात्रक मानसिक अतिव्यस्तता एकर कारण सेहो थिक।

तीन प्रमुख प्रतीक: डायरी, महाविद्यालय आ व्यंग्यचित्र

डायरी पहिल आ अन्तिम बिम्बक बीच अर्थ बदलैत अछि। प्रारम्भमे ओ भविष्यक प्रसिद्धिक दस्तावेज होयबाक स्वप्न अछि। मध्य भागमे ओ समयाभाव आ निर्णयक टालमटोलक साक्षी अछि। अन्तमे ओ वस्तुगत घटनाक ढेरक बावजूद व्यक्तिक आत्मस्वीकृतिक असमर्थताक रूपक

बनैत अछि। जे व्यक्ति विद्यालयीय समाजक सार्वजनिक लेखा राखबैत अछि, वैह अपन भीतरी जीवनक विश्वसनीय लेखा नहि लिखि पबैत अछि—एहि विडम्बनामे शीर्षकक गहनता अछि।

महाविद्यालय शिक्षा आ स्वायत्त चिन्तनक आदर्श स्थान होयबाक अपेक्षा राखैत अछि। कथामे ओकर भवनक विस्तार प्रगतिशीलता देखबैत अछि, मुदा ताहि संग चुपचाप नाना प्रकारक दबाव सेहो बढ़ैत अछि। ई विरोध सूचित करैत अछि जे भौतिक निर्माण आ संस्थागत नैतिक निर्माण समानार्थक नहि। परीक्षा, नियुक्ति, पद-प्रतिष्ठा आ छात्र-अधिकारक प्रसंग सभ मिलि संस्थाकें स्थानीय समाजक शक्ति-मानचित्रक रूपमे स्थापित करैत अछि।

कथाक संग प्रकाशित रूपरेखात्मक व्यंग्यचित्रमे ताज-सदृश आकृति, मुखक विकृति आ देहक सांकेतिक रेखा शाब्दिक घटनाक प्रतिलिपि नहि, सत्ता-आकांक्षा आ अटपटापनक दृश्य संकेत बनैत अछि। एहि चित्रसभक योगदान इएह जे पाठक प्राचार्यक सामाजिक पदकें हास्यक दूरीसँ देखए लगैत अछि। एहि दृश्य-भाषाक तुलना सचित्र बाल-कथासँ करब सम्भव अछि, मुदा दुनूक कार्य अलग अछि: बाल-चित्रकथामे बोध आ स्मरणक सहायता प्रमुख भऽ सकैत अछि; एतए व्यंग्य आ संस्थागत आलोचना मूल प्रवृत्ति अछि।

शिक्षण-संस्था आ राजनीति: कथाक सामाजिक आलोचना

कथाक शिक्षण-संसारमे औपचारिक नियम आ वास्तविक निर्णय-शक्ति एक-दोसरासँ पृथक देखाइत अछि। विश्वविद्यालयक दफ्तर, प्रबन्ध समिति, शिक्षकक पद, परीक्षा-मूल्यांकन आ परिसरक आवाज सभ प्रक्रिया निर्धारण करबाक अधिकार राखैत अछि; मुदा राजनीतिक संरक्षण, व्यक्तिगत अनुशंसा आ भय एही प्रक्रियाकें मोड़ैत अछि। लेखक एहि तनावकें शुद्ध प्रशासनिक रिपोर्टक भाषा नहि, व्यक्तिक मनःस्थितिक माध्यमसँ देखबैत छथि। परिणामतः सत्ता-केंद्रक समस्या मनुष्यक निजी अस्थिरताक समस्या सेहो बनि जाइत अछि।

एहि कथामे शिक्षित व्यक्तिक नैतिक संकोच विशेष अर्थपूर्ण अछि। प्राचार्य अनेक अवसरपर जानैत छथि जे संस्था लेल की न्यायसंगत होएत; तैओ निर्णयक समय अपन भविष्य, नाम आ नौकरीक

चिन्ता हुनका डगमग करैत अछि। एहि मानवीय दुर्बलताकें बुझला बिना कथाक सामाजिक आलोचना अधूरी रहत। लेखकक व्यंग्यक असल लक्ष्य केवल भ्रष्टाचार नहि, अपितु ओ मानसिक युक्तिसभ अछि जकरा सहारे सुशिक्षित व्यक्ति अपन समझौतेकें अनिवार्य कहि वैध बनबैत अछि।

छात्रसभक सक्रियता एकटा महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष रचैत अछि। हुनक उपस्थितिसँ महाविद्यालय केवल प्राचार्यक सम्पत्ति नहि रहि जाइत अछि; ओ साझा संस्था बनैत अछि जाहिमे प्रश्न उठएबाक अधिकारक संघर्ष होइत अछि। तथापि कथा छात्र-आन्दोलनक आन्तरिक विविधतापर अपेक्षाकृत कम ठहरैत अछि। विद्यार्थीक प्रत्यक्ष वैयक्तिक आवाज आओर विस्तार पबितैक तँ संस्थागत आलोचना अधिक बहुकोणीय बनि सकैत छल।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक संवाद

विधागत अन्तरक स्पष्टता

‘डायरीक खाली पन्ना’कें बाल-कथा वा बाल-उपन्यास कहब पाठक-वर्गक दृष्टिँ भ्रामक होएत। मूल प्रकाशनमे एकरा दीर्घ-कथा मानल गेल अछि, आ कथामे विश्वविद्यालयक प्रशासन, राजनीतिक गुटबन्दी, वयस्क व्यक्तिक आत्मछल, पदक दबाव आ जटिल सामाजिक व्यंग्य प्रमुख अछि। नेनालोकनिक वयस, भाषिक ग्रहणशीलता वा लोककथाक सहज रूपान्तरणक अनुरूप रचना व्यवस्थित नहि अछि। एहि कारणे बाल-साहित्यसँ तुलना समान विधाक दू पाठक प्रतिस्पर्धा नहि, एकहि भाषाक भिन्न पाठकीय संरचनाक तुलना थिक।

लोकश्रुति आ बाल-साहित्यक आधार

विदेहक अङ्क ५० मे फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’ मैथिली शिशु लोक-साहित्यक मौखिक परम्परा, लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी रूपक चर्चा करैत छथि। एहि ऐतिहासिक बोधसँ स्पष्ट होइत अछि जे बाल-साहित्यक मूल प्रवाह केवल प्रकाशित उपदेशात्मक कथा नहि, अपितु घर-आँगनक ध्वनि, खेल आ सामुदायिक स्मृतिक संग जुड़ल अछि। कुमार पवनक रचना एहि ध्वन्यात्मक लोक-बाल संसारक प्रत्यक्ष उत्तराधिकारीक रूपमे नहि लिखल गेल अछि; तकर केन्द्र

आधुनिक शिक्षण-संस्था आ वयस्क विवेकक संकट अछि। तथापि दूनूमे समाज अपन मूल्य अगिला पीढ़ी धरि कोना पहुँचबैत अछि, से प्रश्न परोक्ष रूपेँ जुड़ैत अछि। (फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’, २०१०)

बाललोककथाक सरलता आ प्रौढ़ व्यंग्यक उलझन

डॉ. योगानन्द झा बाललोककथाक भाषिक सरलता, संक्षिप्त वाक्य, कुतूहल, लोकमुखी कथन, सहज पात्र-विन्यास आ प्रायः स्पष्ट परिणामक महत्त्व बतबैत छथि; ओ दीर्घ आ लघु लोककथाक भेद सेहो करैत छथि। एहि कसौटीपर कुमार पवनक रचना विपरीत दिशा चुनैत अछि। एतए संशय समाधानसँ अधिक टिकैत अछि, कथाक नैतिक अर्थ एकटा पाठमे समाप्त नहि होइत, आ प्राचार्यक मानसिक उलझन रचनाक शक्ति अछि। तँ दीर्घ आकार मात्र बालदीर्घकथाक परिचायक नहि; कथाक उद्देश्य आ पाठकीय संज्ञान सेहो निर्णायक थिक। (योगानन्द झा, २०११)

चित्रकथाक इतिहास आ एहि रचनाक दृश्य-हास्य

दुर्गानन्द मण्डल मैथिली बाल-चित्रकथामे प्रीति ठाकुरक योगदानक विवेचन करैत लोककथा, गोनू झाक चातुर्य आ लोकनायकक दृश्य पुनर्स्मरणपर बल दैत छथि। एहि प्रसंगभूमिमे कुमार पवनक संग प्रकाशित व्यंग्यचित्र पाठकीय अनुभवक दोसर शाखा देखबैत अछि। बाल-चित्रकथामे चित्र कथासूत्रकेँ दृश्य रूपेँ सुलभ बना सकैत अछि; एतए चित्र लेखकीय व्यंग्यक करारा संकेत बनैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे चित्रक कारणे ई बाल-साहित्य अछि; चित्रक सामाजिक कार्य बुझबाक तुलनात्मक अवसर मात्र अछि। (दुर्गानन्द मण्डल, २०१२; मूल कथा,, २१, २४, २९-३०)

बालनाटक आ संस्थागत प्रतिरोध

रमेश रञ्जनक बालनाटक सम्बन्धी विदेह आलेख, बाल-पाठकक सक्रिय भागीदारी आ नाटकीय संरचनाक विमर्श लेल उपयोगी सन्दर्भ थिक। कुमार पवनक दीर्घ-कथामे छात्र-आन्दोलन, संवाद, आगमन-निर्गमन आ सार्वजनिक आरोप सभ एकटा नाटकीय प्रभाव बनबैत अछि; मुदा ओकर दृश्य-रचना बालमंचक सहज दृश्य-न्यायक अनुरूप नहि। एतए प्रतिरोध सेहो प्रचार आ सत्ता-गणितसँ अस्पष्ट बनि जाइत अछि। वयस्क पाठक लेल एहि अस्पष्टतामे आलोचनात्मक अवसर अछि; छोट

बालक लेल सम्भवतः प्रसंग-विवेचनक सहायताक आवश्यकता पड़त। (रमेश रञ्जन, २०१३; मूल कथा,)

समकालीन बाल-उपन्यास समीक्षा आ पाठकीय कर्तृत्व

विदेहमे प्रकाशित ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बालपात्रक कर्तृत्व, लोककथाक पुनर्लेखन, चित्र आ भाषा, नैतिक औचित्य तथा पाठकीय आयु सन मानदण्डक चर्चा करैत अछि। एहि आलोचनात्मक मानचित्रक उपयोगसँ ‘डायरीक खाली पन्ना’क विधागत सीमा आओर स्पष्ट होइत अछि। कथा प्रौढ़ प्राचार्यक चेतनामे केन्द्रित अछि; विद्यार्थीसँ सम्बन्धित पात्र-संसार ओकरा चुनौती दैत अछि, मुदा विद्यार्थी स्वयं प्रमुख दृष्टि-पात्र नहि बनैत। एतए बाल-अनुकूल कथनक बदला बाल-केन्द्रित संस्थाक वयस्क विफलताक आलोचना भेटैत अछि। (गजेन्द्र ठाकुर, २०२६)

किशोर पाठक लेल सम्भावित उपयोग

उच्चतर किशोर-पाठक संग निर्देशित पाठ-चर्चामे ई कथा शिक्षण-संस्थाक जवाबदेही, अफवाहक जाँच, परीक्षा-सुचिता, छात्र-स्वायत्तता आ स्वतन्त्र अभिव्यक्तिक विषय उठा सकैत अछि। मुदा एहन पाठ-प्रयोग रचनाकें मूलतः बाल-साहित्य प्रमाणित नहि करैत। शिक्षा-सन्दर्भमे उपयोगी होएब आ बाल-पाठक लेल रचित होएब दू अलग कोटि अछि; साहित्येतिहासमे एहि भेदकें सुरक्षित राखब आवश्यक अछि।

प्रमुख उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

रचनाक पहिल उपलब्धि अछि—व्यक्तिगत अस्थिरतासँ सामाजिक संरचनाक विडम्बनाक उद्घाटन। महाविद्यालयक प्राचार्यक दुविधा सहज हास्यक विषय भऽ सकैत छल, मुदा कथाकार ओकरा संस्थागत शक्ति-सम्बन्धक संग जोड़ि दैत छथि। दोसर उपलब्धि अछि आत्मलेखनक रूपकः जीवनक प्रत्येक घटना लिखबाक योग्य होइतहुँ कागज खाली रहल तँ प्रश्न केवल समयभावक नहि, सत्य-स्वीकारक क्षमता पर उठैत अछि। तेसर उपलब्धि अछि संवाद, अनुमान, आत्म-प्रश्न आ टूटैत मनोवाक्यक माध्यमसँ संकोचक जीवित चित्रण।

कथाक सीमा आंशिक रूपेँ तकर विस्तारमे निहित अछि। प्रशासन, पद, राजनीति आ छात्र-संघर्षक प्रसंगक घनत्व किछु ठाम पाठकक ध्यान मूल डायरी-रूपकसँ हटबैत अछि। व्यक्ति-चित्रणमे प्राचार्य केन्द्रमे एतेक छथि जे विद्यार्थी आ स्त्री-पात्रक स्वतंत्र दृष्टि कम विस्तृत भऽ पबैत अछि। राजनीतिक प्रभावक नाना पात्र कखनो प्रकार-चरित्र बनि रहि जाइत छथि; हुनक अपना सामाजिक-ऐतिहासिक जटिलता आओर खुलल रहितैक तँ संघर्ष अधिक बहुस्तरीय होइत।

तथापि लेखक ई जोखिम लैत छथि जे ओ अपन प्राचार्यकेँ न सर्वथा खलनायक बनबैत छथि, न आदर्श सुधारक। कथाक अन्त अनिश्चित रहलासँ पाठक सामाजिक प्रश्नसँ मुक्त नहि होइत अछि। साहित्यिक उपलब्धिक माप केवल कथात्मक अनुशासन नहि; जखन रचना पाठककेँ नैतिक निर्णयक सुविधा नहि दऽ सकैत अछि, तखन वैह असुविधा ओकर आलोचनात्मक शक्ति बनि उठैत अछि।

निष्कर्ष: लेखनक असम्भवतासँ आत्मसाक्ष्यक प्रश्न धरि

कुमार पवनक ‘डायरीक खाली पन्ना’ मैथिली दीर्घ-कथाक ओहि प्रवृत्तिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण मानल जा सकैत अछि जाहिमे संस्थागत यथार्थक आलोचना मनुष्यक भीतरक असमञ्जसक सहारे व्यक्त होइत अछि। प्राचार्य स्वयंकेँ विश्वसनीय बनएबाक लेल संस्था, पद, सम्पर्क, चुनावी समीकरण आ सामाजिक आदरक बेर-बेर आश्रय लैत छथि; मुदा जखन निज जीवनक ठोस साक्ष्य देबाक प्रश्न अबैत अछि, तखन शब्दक भरोसा डोलि जाइत अछि। कथाक अन्तिम रिक्तता हारक सपाट घोषणा नहि, समाजक शक्ति-व्यवस्थामे फँसल चेतनाक खुलल प्रश्न अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे एकरा बाल-साहित्यक उदाहरण मानबाक बदला शिक्षा-संस्था-विषयक प्रौढ़ सामाजिक व्यंग्य-कथाक रूपमे राखब अधिक युक्तिसंगत अछि। बाल-साहित्यक तुलनात्मक अध्ययन एहि रचनाक स्थान निर्धारित करबाक कसौटी दैत अछि: बालोपयोगिता, बाल-कर्तृत्व, कथावाचनक सुलभता, दृश्य-भाषा आ नैतिक निर्णयक रूप सभमे एकर प्रकृति पृथक अछि। ठीक

एहि भिन्नताक कारण ई रचना शिक्षक, पाठक, छात्र आ साहित्यालोचकक बीच जिम्मेवारी, सत्ता आ लेखकीय सत्यक सम्बन्धपर गम्भीर संवाद उत्पन्न करबाक सामर्थ्य राखैत अछि।

अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप

लोकोक्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा आ कथात्मक व्यंग्य

रचनाक अन्तरंग

कुमार पवनक ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ सामान्य लोकोक्तिक अर्थ खोजबाक बहाने आधुनिक मैथिली समाजमे अर्थ, मूल्य, प्रतिष्ठा आ सफलता बीचक अन्तरविरोधकें उजागर करैत कथात्मक व्यंग्य अछि। ‘संकल्प’ मे प्रकाशित एहि रचनाक विस्तृत प्रसंगसभमे प्रथमपुरुष कथावाचक पाठकसँ प्रत्यक्ष सम्बोधन करैत अछि, भुवन ककासँ संवाद करैत अछि, अपन कल्पना आ आकांक्षाक पाछाँ दौड़ैत अछि, आ संस्थागत प्रतिष्ठाक भिन्न-भिन्न रूपसँ टकराइत अछि। ‘अशर्फी’ आ ‘कोइला’क मूल्य-विपर्यास कथा भरि एकहि निश्चित व्याख्यामे आबद्ध नहि रहैत; प्रतिपल नव प्रसंग ग्रहण करैत अछि। एहि लेखमे रचनाक आठो कथांशक पृथक पाठविश्लेषण, कथावाचकक आत्मव्यंग्य, संवादधर्मिता, कथ्य-शिल्प, शैक्षिक संस्थाक विडम्बना, नैतिक दुविधा आ खुला अन्तक अध्ययन कएल गेल अछि। हरिमोहन झाक हास्य-व्यंग्य परम्परा आ बादक मैथिली व्यंग्य-रचनाक सन्दर्भमे एकर ऐतिहासिक स्थानक तुलनात्मक निरूपण कएल गेल अछि। निष्कर्ष ई अछि जे रचना लोकभाषाक सहज हास्यकें बौद्धिक आ सामाजिक प्रतिष्ठाक आलोचनात्मक परीक्षणमे परिणत करैत अछि; मुदा एकर अतिप्रसारित प्रसंग-विन्यास आ संकेतक स्थानीयता पाठकसँ सक्रिय अर्थ-निर्माणक अपेक्षा सेहो करैत अछि।

प्रस्तावना: लोकोक्तिः कथाक प्रवेश

लोककथनक विशेषता ई अछि जे एकहि छोट पदबन्धमे समाजक अनुभवक घनत्व सुरक्षित रहैत अछि। लोककथन जखन कथात्मक रचनाक शीर्षक बनैत अछि तँ ओकर अर्थ केवल शब्दकोशक व्याख्या नहि रहैत; कथा ओकर अभिप्रायक परीक्षा करैत अछि। कुमार पवनक ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ एही प्रक्रियाकेँ अपन कथात्मक आधार बनबैत अछि। अशर्फीक मूल्य आ कोइलाक सामान्यता बीच जे असमानता अछि, से एकटा मूल्य-निर्णयक पूर्वधारणा रचैत अछि। मुदा कथावाचक एतबेर नहि रुकैत अछि। ओ प्रसंग-पाछाँ-प्रसंग लोकोक्तिक अर्थ खोजैत रहैत अछि, आ प्रत्येक व्याख्याक संग अर्थ स्वयं अस्थिर होइत जाइत अछि।

रचनाक आरम्भमे पाठककेँ सीधा सम्बोधित कएल गेल अछि। कथावाचक प्रश्न करैत अछि, सम्भावित उत्तरक अनुमान करैत अछि, फेर ओकरा स्वयं उलटैत अछि। पाठक एतय निश्चेष्ट श्रोता नहि, तर्क-वितर्कक अधोषित सहभागी अछि। एहि संवादात्मक रचना-पद्धतिक कारण पाठ मुख्यतः घटना-प्रधान कथा नहि बनि, अनुभव, कल्पना, आत्मप्रहसन आ सामाजिक विडम्बनाक आवागमन सँ गठित होइत अछि। सतही पाठमे ई एकटा कहबीक अर्थ परिहासपूर्वक खोजबाक विवरण बुझाईत अछि; निकट पाठमे सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जन करबाक व्यग्रता आ मूल्यक विस्थापन रचनाक मूल विषयक रूपमे उभरैत अछि।

कथासंरचना: प्रश्न, प्रसंग आ पुनः प्रश्न

कथावाचक पहिने एकटा कहबी उपस्थित करैत अछि। ओकरा ई बूझल नहि अछि जे कहबीक सटीक आशय की होइत अछि। प्रश्नक उत्तर लेल ओ अनुभवसम्पन्न भुवन ककाक शरण लैत अछि। ककाक वचनमे लोकानुभवक ठोस धरातल अछि, मुदा संवाद कथावाचकक असन्तोष समाप्त नहि करैत। एहि बिन्दुसँ रचना अनेक प्रसंगमे प्रवाहित होइत अछि। कथावाचक अपन जीवनक कल्पना, विशिष्ट लोकक संग भेटक सम्भावना, बौद्धिक सम्मान, सामाजिक उन्नति आ

भविष्यक विचित्र योजनाक भीतर घूमैत अछि। ओकर भाषामे कखनो आत्मविश्वास, कखनो आत्महीनता, कखनो प्रशंसाक लालसा आ कखनो अस्वीकारक साहस सुनाइत अछि।

मध्य भागमे चमत्कारी अनुभूति, महान व्यक्तिक दर्शन, महत्त्वपूर्ण लोकक सान्निध्य आ अकस्मात् लाभक कल्पना कथावाचककेँ अनेक दिशामे लऽ जाइत अछि। परम्परागत कथा सन एकमात्र कारण-कार्य-शृंखला एतय नहि अछि। प्रत्येक कल्पना पूर्ववर्ती प्रसंगपर टिप्पणी करैत नव विडम्बना जोड़ैत अछि। प्राध्यापकक पद, विश्वविद्यालय, शोधक उपाधि, नौकरी आ सिफारिशक प्रसंग आविते सतहपर व्यक्तिगत उन्नतिक कथा बौद्धिक-सामाजिक प्रतिष्ठाक तन्त्रपर प्रश्न बनि जाइत अछि। अन्तिम भागमे आर्थिक लाभक अस्वच्छ बाट, प्रभावशाली लोकसँ सम्पर्क आ सुविधा अर्जनक विकट विकल्प सेहो उभरैत अछि। एतय सफलता आ नैतिकता एक-दोसराक विकल्प बनि ठाढ़ होइत अछि।

कथाक अन्त आरम्भक प्रश्नकेँ पुनः पाठकक समक्ष अनैत अछि। अन्तिम प्रश्नक कारण आरम्भमे देल लोकोक्तिक अर्थ पाठकक विवेकपर पुनः निर्भर भऽ जाइत अछि। ई गोलाकार संरचना रचनाक प्रमुख शिल्पगत उपलब्धि अछि। व्यंग्यक आशय अन्तिम वाक्यमे बन्द नहि होइत; उलटे पाठ समाप्त भेलाक बादो विचार खुलल रहैत अछि।

कथाविस्तार आ प्रसंग-रचना

पाठक-सम्बोधन, शीर्षक आ मूल्यक प्रारम्भिक द्वन्द्व

एहि प्रसंगमे शीर्षकक संग ‘कथात्मक व्यंग्य’ विधा-सूचना रचनाक आलोचनात्मक ग्रहणक दिशा स्पष्ट करैत अछि। आरम्भक ‘प्रिय पाठकलोकनि’ प्रत्यक्ष सम्बोधन अछि; लेखक पाठककेँ ऊँच आसनपर बैसल निर्णायक नहि, साझी विचारक रूपमे स्थापित करैत छथि। कहबीक मूल पदबन्ध ‘अशर्फीक लूटि आ कोइला पर छाप’ कथा-विन्यासक स्थायी धुरी बनैत अछि। अशर्फी मूल्यवान, कोइला अपेक्षाकृत साधारण; ‘लूटि’ आ ‘छाप’ शब्द गतिविधि आ चिह्नक भिन्न स्तरक ओर संकेत

करैत अछि। प्रश्न ई उठैत अछि जे मनुष्य मूल्यवान वस्तुकेँ छोड़ि नाममात्रक लाभपर किएक अटक जाइत अछि। मुदा एहि पहिल व्याख्याकेँ कथा निर्विवाद सत्य नहि मानैत।

एहि प्रसंगमे कथावाचकक आत्मीय बोलचाल, व्याकरणिक प्रश्नसूचकता आ जीवनानुभवसँ निकलल लोककथन एक साथ उपस्थित अछि। भुवन ककाक प्रवेश लोकबुद्धिक मूर्त रूप सन भऽ उठैत अछि। ‘कका’ सम्बोधन पारिवारिक आत्मीयताक संग बुजुर्गक अधिकार सेहो बनबैत अछि। कथावाचक स्वयं असमर्थ कहलासँ लजाइत नहि; एहि आत्मस्वीकृतिमे हास्यक बीज अछि। मूल्यवान वस्तुक खोजसँ बेसी ओकर उपयोगक उद्देश्य पर प्रश्न उठैत अछि। ई प्रसंग एही द्विस्तरीय प्रश्नक स्थापना करैत अछि—कहबीक अर्थ की, आ जीवनमे ‘मूल्य’क अर्थ के निश्चित करैत अछि?

भुवन कका आ लोकबुद्धिक अपूर्ण समाधान

दोसरा कथांशपर भुवन ककाक संग कथावाचकक संवाद विस्तार पबैत अछि। कथावाचक कथनक अर्थ बूझबाक लेल बूढ़ लोकक अनुभवमे शरण अनैत अछि, मुदा अनुभवक उत्तर सहज आ पूर्ण अर्थ-निर्णय नहि दैत। ककाक प्रतिक्रिया आ कथावाचकक अगिला जिज्ञासा मिलि सामाजिक ज्ञानक एकटा महत्वपूर्ण तनाव उपस्थित करैत अछि। ककाक भूमिका मात्र गुरु वा उपदेशकक नहि अछि; हुनका सम्बोधित करैत कथावाचक स्वयं अपन असंगति खोलैत जाइत अछि।

एहि प्रसंगमे समाजक लोकक ‘मूल्य’ ठहराबबाक प्रचलित आधार—पैघ व्यक्ति, पद, सम्मान, नाम, कीर्ति, ऊँच-नीच—व्यंग्यक भीतर प्रवेश करैत अछि। वस्तुक आर्थिक मूल्य आ प्रतिष्ठाक प्रतीकात्मक मूल्य एके नहि होइत, मुदा लोक-व्यवहारमे दुनू प्रायः एक-दोसरामे बदलि देल जाइत अछि। पात्रक बातचीत एही गड़बड़ीकेँ उजागर करैत अछि। गद्यक गति निरन्तर प्रश्न-प्रतिप्रश्नसँ बनैत अछि; एतय लम्बा विवेचनात्मक प्रसंगक बदला संवादक जड़त्वहीन लय कथाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

कल्पनाक विस्तार आ आत्ममुग्धताक परीक्षा

एहि प्रसंगमे कथावाचकक ध्यान अत्यन्त महत्वपूर्ण लोकक दर्शन, अप्रत्याशित उपलब्धि आ अपन सम्भावित भविष्यपर केन्द्रित होइत अछि। महापुरुष-सम्बन्धी कल्पना आ ‘दर्शन’क अर्थकेँ लेखक व्यंग्यात्मक ढङ्गसँ बरतैत छथि। कथावाचक जतेक अधिक असाधारण भविष्यक कल्पना करैत अछि, ततेक ओकर वर्तमानक असमर्थता प्रकट होइत अछि। परिणामस्वरूप हास्य केवल बाहरी पात्रपर नहि, कथावाचकपर स्वयं सेहो पड़ैत अछि। ई आत्मव्यंग्य रचनाकेँ केवल दोसरक उपहास बनबासँ बचबैत अछि।

रचनाक दृश्य लगातार बदलैत अछि। ई परिवर्तित मानसिक दृश्य पाठकसँ अपेक्षा करैत अछि जे ओ वास्तविक भेट, कल्पित घटना आ कथावाचकक आकांक्षाक बिम्बकेँ अलग-अलग बूझय। ओहि अर्थमे एहि प्रसंग कथाक बाह्य समयसँ बेसी मानसिक समयक प्रसंग अछि। कल्पनाक एक-एक छलँग समाजक सफलताक एक-एक मानदण्डक परीक्षा करैत अछि। ‘बड़’ बनबाक चाहना आ बड़प्पनक वास्तविक नैतिक अर्थ बीच दूरी उभरैत अछि।

सम्मानक भाषा आ पद-प्रतिष्ठाक अभिनय

एहि प्रसंगमे कथावाचकक आकांक्षा अधिक प्रत्यक्ष सामाजिक रूप ग्रहण करैत अछि। ‘प्रोफेसर साहेब’ सन सम्बोधन केवल आदरक शब्द नहि, पद आ प्रभावक सामूहिक कल्पनाक सूचक अछि। बौद्धिक अधिकारक स्रोत जखन विचारक गुणवत्ता नहि, तदर्थ पदक चमक बनि जाइत अछि, तखन व्यंग्यक सम्भावना बढ़ैत अछि। कथावाचक अपनाकेँ एहन परिदृश्यमे देखैत अछि जाहिमे शिक्षा आ प्रतिष्ठा एक-दोसराक आधार मानल जाइत अछि, मुदा हुनक संग लाभक अपेक्षा सेहो जुड़ल अछि।

एहि प्रसंगक विशेषता अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-कल्पना अछि। अत्यल्प दैनिक घटना कथावाचकक मनमे बड़ सामाजिक दृश्य बनि जाइत अछि। भाषामे विनयक मुद्रा आ इच्छाक तीव्रता परस्पर उलझल अछि। ई अन्तर्विरोध पाठककेँ हँसाबैत अछि, मुदा हँसीमे आलोचनाक धार अछि—कतेक बेर हमर सार्वजनिक आदर वास्तवमे पदसँ सम्भावित लाभक आदर होइत अछि?

सामाजिक गतिशीलता, सम्बन्ध आ स्वार्थक छाया

एहि प्रसंगमे परिचित लोकसँ भेट, गामक स्मृति आ अपन सामाजिक स्थितिक तुलना महत्त्वपूर्ण होइत अछि। लोक एक-दोसराकेँ पूर्वपरिचयक आधारपर चिन्हैत अछि, मुदा सामाजिक स्थिति बदलिते सम्बोधन आ व्यवहार सेहो बदलि सकैत अछि। कथावाचक एहि अन्तरक प्रति अत्यधिक संवेदनशील अछि। ओकर मानसिक प्रतिक्रिया देखबैत अछि जे पद, सम्पत्ति आ परिचयक अभाव व्यक्तिक भीतर कतेक प्रकारक हीनताबोध आ आत्मप्रदर्शनक इच्छा उत्पन्न करैत अछि।

अनेक संवाद अर्धोक्तिमे समाप्त होइत अछि; प्रतिक्रिया प्रायः तात्कालिक आ भावुक अछि। एहिसँ कथावाचक सम्पूर्ण विश्वसनीय विचारक नहि रहि जाइत अछि। पाठक ओकर कथनकेँ ओकर इच्छाक सन्दर्भमे तौलैत अछि। व्यंग्यक ई सूक्ष्म युक्ति अछि—कथावाचक जे स्वीकार करैत अछि, लेखकक आलोचनात्मक दृष्टि ओकरासँ अलग सेहो ठाढ़ भऽ सकैत अछि। एहि प्रसंगमे सामाजिक उन्नतिक सपनाकेँ वस्तुनिष्ठ सफलता नहि, मानसिक दबावक रूपमे पड़ल जा सकैत अछि।

प्राध्यापकक वेतन, संस्थान आ बौद्धिक पूँजी

एहि प्रसंगमे ‘प्राध्यापकक वेतन’क उल्लेख रचनाकेँ शैक्षिक-संस्थागत जीवनसँ स्पष्ट रूपसँ जोड़ैत अछि। विश्वविद्यालय, अध्यापन, शोध, परीक्षकक कार्य आ डिग्रीक प्रसंग एकटा एहन संसार खोलैत अछि जतय ज्ञानक सामाजिक उपयोग आ जीविकाक अवसर एक-दोसरासँ जुड़ल रहैत अछि। रचना ज्ञानार्जनक उपहास नहि करैत; ज्ञानक नामपर प्रतिष्ठा, अवसर वा कृपादृष्टि अर्जित करबाक प्रवृत्तिक परीक्षा करैत अछि।

पदक आकांक्षाक संग ‘काज’क वस्तुनिष्ठ प्रश्न उपस्थित होइत अछि। कोनो उपाधि पाबि लेबाक इच्छा आ ओकर योग्यता विकसित करबाक प्रयत्न एकहि नहि। कथावाचकक अप्रस्तुतता एहि अन्तरकेँ हास्यक विषय बनबैत अछि। गद्य-पद्धतिमे छोट प्रश्न, तत्काल उत्तर आ निष्कर्षक अकस्मात् उलटावक कारण संस्थानक विमर्श उपदेशात्मक निबन्ध नहि बनैत। सामाजिक आलोचना

कथा आ हँसीमे धुलि जाइत अछि। एहि प्रसंगकेँ रचनाक संस्थागत व्यंग्यक केन्द्रीय कड़ी मानल जा सकैत अछि।

अवसरवाद, सिफारिश आ आत्म-सम्मानक द्वन्द्व

एहि प्रसंगमे कथावाचक अपन परिचय, पूर्वसम्बन्ध आ सामाजिक प्रगतिक सम्भावित सहायताक ओर पुनः बढ़ैत अछि। प्रभावशाली व्यक्ति, सिफारिश, नौकरी आ सुविधाक चर्चासँ ई प्रश्न तीव्र होइत अछि जे सफलता स्वयं अर्जित श्रमक परिणाम मानल जाय कि सम्पर्कक परिणाम। पात्रक स्वप्न सतत बदलैत अछि; ओकर निर्णयमे ठहराव कम, अवसरक प्रति आकर्षण बेसी बुझाईत अछि। एहि अनिश्चितताकेँ लेखक नैतिक टिप्पणीसँ कम आ घटनाक अनपेक्षित मोड़सँ बेसी प्रकाशित करैत छथि।

महत्त्वपूर्ण बात ई जे रचना केवल व्यक्ति-विशेषक लोभक चित्रण नहि अछि। सामाजिक संरचना स्वयं एहन अछि जतय पदबद्ध लोकनिक निकटता लाभक साधन बनैत अछि। कथावाचकक कमजोरी एही संरचनाक उपज सेहो अछि। तथापि रचना ओकरा पूर्णतः निर्दोष नहि ठहरबैत; ओकर आत्मप्रवंचनापर बराबर प्रहार करैत अछि। अवसरवादक एहि द्विपक्षीय आलोचनामे पाठककेँ व्यक्ति आ संस्था दुनूकेँ देखबाक अवसर भेटैत अछि।

नैतिक सीमारेखा आ पाठकपर लौटैत प्रश्न

एहि प्रसंगमे कथावाचकक समक्ष अवैध तस्करी सन विकल्पक चर्चा आवैत अछि। एहि प्रसंगकेँ शब्दशः घटना-वृत्तान्त मानबाक बदला सामाजिक उन्नति लेल ‘कोनो बाट’ पकड़बाक अतिशय लोभक व्यंग्यात्मक सीमा बुझब उचित अछि। सामाजिक सफलता जे कखनो सम्मानक रूपमे दिखल छल, आब नैतिक अपकर्षक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि। कथावाचक एहि विकल्पपर असहमत सेहो होइत अछि; अतः ओकर चरित्र एकरेखीय अवसरवादी नहि, परस्पर विरोधी इच्छासँ भरल मनुष्यक चरित्र अछि।

समापनमे कथावाचक फेर पाठककेँ सम्बोधित करैत प्रश्न करैत अछि—‘की, अहाँलोकनिक आर कोनो अर्थक पता अछि?’ आरम्भक कहबी अन्तमे व्याख्याक बन्द दरबज्जा नहि, खुलल प्रश्न बनि जाइत अछि। कथावाचक जकर अर्थ पूरे पाठमे खोजैत रहल, ओकर समुचित उत्तर पाठकक विवेक पर छोड़ि दैत अछि। एहि खुलापनमे पाठकक आलोचनात्मक भूमिका सुनिश्चित होइत अछि। रचनाक अन्तिम कथांशपर रचनाकारक सम्बद्धता हिन्दी विभाग, जगदम्बा महिला कॉलेज, लहेरियासराय रूपमे छपल अछि; तथापि एहि सूचनासँ अतिरिक्त जीवनी-संबन्धी अनुमान करब उचित नहि।

कथाशिल्प आ अर्थक बहुस्तरीयता

लोकोक्ति: कथानक नहि, अर्थक यन्त्र

लोकोक्ति प्रायः जीवनक जटिल परिस्थितिक छोट निष्कर्ष होइत अछि। मुदा लेखक एकर अर्थकेँ पूर्वनिश्चित स्वीकार नहि करैत छथि। कहबीक अशर्फी आ कोइला अलग-अलग प्रकारक मूल्यक बिम्ब बनैत अछि। कतेको प्रसंगमे ‘अशर्फी’ आर्थिक लाभक, कतेकोमे प्रतिष्ठाक, कतेकोमे विवेकपूर्ण निर्णयक प्रतिरूप बुझाइत अछि। ‘कोइला पर छाप’ छोट उपलब्धिमे अटकल रहबाक, व्यर्थ श्रम अथवा अर्थहीन बाह्य चिह्नपर मोहित होयबाक संकेत दऽ सकैत अछि। मुदा ई सभ सम्भावना विश्लेषणात्मक व्याख्या अछि; पाठ कोनो एक अर्थकेँ अन्तिम प्रमाणित नहि करैत। एहि सावधानीक बिना व्यंग्यक खुलल अर्थ एकटा नारा बनि जायत।

लोककथनक पुनरागमन कथाक प्रवाहमे एकरूपता कायम राखैत अछि। प्रसंग बदलैत अछि, मुदा प्रश्न नहि बदलैत। एहि कारण रचना भलँ विस्तारमे शिथिल बुझाय, संरचनात्मक स्तरपर ओकर केन्द्र स्थिर अछि। कहबीक स्वरूप एकटा कसौटीक अछि जाहिरपर सामाजिक घटना कसि-कसि देखल जाइत अछि।

‘हम’क अविश्वसनीयता आ आत्मव्यंग्य

प्रथमपुरुष कथावाचकक विशेषता ई अछि जे ओ अपनाआपकेँ ज्ञानक अधिकारसंपन्न केन्द्र बनबैतहुँ सेहो अपन असमंजस प्रकट करैत अछि। पाठक ओकर शब्दक संग ओकर आकांक्षा सेहो पढ़ैत अछि। ओ जतेक महत्वपूर्ण होयबाक कल्पना करैत अछि, ततेक आत्मविसंगति उजागर होइत अछि। एहि तकनीकमे व्यंग्यक लक्ष्य केवल ‘दोसर’ नहि, स्वयं कथन करैत ‘हम’ सेहो अछि। पाठक ओकर संग हँसैत अछि, ओकरापर सेहो हँसैत अछि, आ अन्ततः अपन सामाजिक स्वभावपर विचार करैत अछि।

कथावाचकक अनेक विचार तत्काल परिवर्तित होइत अछि। एहि अस्थिरताकेँ मात्र चरित्र-दोष नहि कहल जा सकैत; ई सामाजिक जीवनक विडम्बनाकेँ कथात्मक रूपमे अभिव्यक्त करैत अछि। एकहि व्यक्ति अपनाकेँ स्वाभिमानी सेहो मानि सकैत अछि आ शक्तिशालीक निकटता लेल आतुर सेहो रहि सकैत अछि। ई आन्तरिक विरोध रचनाक विश्वसनीय सामाजिक मनोविज्ञानक आधार अछि।

संवादधर्मिता: पाठक, कका आ संस्थागत भाषाक संगति

रचनामे कम-सँ-कम तीन स्तरक आवाज सुनाइत अछि—पाठककेँ सम्बोधित करैत कथावाचक, भुवन ककाक अनुभवधर्मी बोली आ पद-प्रतिष्ठाक संसारसँ जुड़ल औपचारिक शब्दावली। एहि आवाजक बीच भिन्नता व्यंग्यक स्रोत अछि। लोकव्यवहारक आत्मीय सम्बोधन जखन ‘प्रोफेसर’, ‘प्राध्यापक’, ‘विश्वविद्यालय’, ‘डिग्री’ सन पदसँ टकराइत अछि, तखन भाषा समाजक पदानुक्रमक नक्शा बनि जाइत अछि। उपदेश देबाक बदला लेखक आवाजक असमानताकेँ आमनेसामने राखैत छथि।

संवादक एहन विन्यास पाठककेँ केवल कथाकारक निष्कर्ष मानबाक आदेश नहि दैत। पाठकक समक्ष अनेक दृष्टि उभरैत अछि, आ ओकरा निर्णय करबाक पड़ैत अछि जे कथावाचक कतय सही अछि, कतय भ्रमित अछि, आ कतय स्वयं अपना मजाक बनबैत अछि।

हास्य, विडम्बना आ अर्थक उलटबाँसी

हास्यक पहिल स्तर सहज भाषिक अछि—लम्बा कल्पनाक बाद छोट खण्डन, प्रश्नक बाद उलटल उत्तर, अतिशयोक्तिक बाद अकस्मात् यथार्थ। दोसर स्तर सामाजिक अछि—जे पदक नाम सुनिते समाज आदरमे झुकैत अछि, ताहि पदक प्राप्तिक वास्तविक योग्यता वा प्रयोजनक परीक्षण प्रायः नहि होइत। तेसर स्तर नैतिक अछि—जे लोक सफलता लेल आतुर अछि, ओकरा एक क्षण एहन बाट देखाइत अछि जाहिमे सफलता आ नैतिकता परस्पर विरोधी होइत अछि। एहि तीनू स्तरमे ‘अशर्फी’क रूपक नित नव अर्थ धारण करैत अछि।

लेखकक व्यंग्यक धार तथ्यक सादा निषेधमे नहि, विषम परिस्थितिक पुनर्संयोजनमे अछि। कोनो अस्वाभाविक कल्पना हास्यास्पद तखन बनैत अछि जखन ओ समाजक प्रचलित स्वीकृत धारणाकें भीतरसँ प्रकट करैत अछि। रचनामे आडम्बर, चापलूसी आ लाभक उत्सुकता एहि प्रकार परीक्षणक वस्तु बनैत अछि।

रचनाक सीमा आ आलोचनात्मक आपत्ति

एहि रचनाक प्रभावक संग किछु सीमासभ सेहो अछि। घटनाक अपेक्षा आत्म-कल्पनाक प्रसार अधिक होयबाक कारण कतिपय प्रसंगमे कथानकक गति मन्द पड़ैत अछि। हास्यक किछु संकेत ओहि समयक स्थानीय सामाजिक सम्बन्ध आ पदावलीक ज्ञानपर निर्भर छथि; वर्तमान पाठक लेल हुनकर तात्कालिक प्रतिध्वनि क्षीण भऽ सकैत अछि। कथा अनेक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा सभ प्रसंगकें समान गाम्भीर्यसँ विकसित नहि करैत। एहि कारण किछु अंश स्वतंत्र परिहासक टुकड़ा सन प्रतीत भऽ सकैत अछि।

तथापि एहि बिखरावकें एकमात्र दोष मानब सेहो उचित नहि। कथावाचकक अनियन्त्रित मनःप्रवाह स्वयं सामाजिक आकांक्षाक अनियन्त्रण प्रदर्शित करैत अछि। अतः पाठककें प्रश्न करबाक चाही जे शिल्पक ढीलापन कतेकटा उद्देश्यपूर्ण अछि आ कतेकटा रचनागत। आलोचनाक न्यायपूर्ण स्थिति एही दुनू सम्भावनाकें मान्यता देब होयत।

मैथिली साहित्येतिहासमे तुलनात्मक स्थान

लोकहास्यसँ आधुनिक कथात्मक व्यंग्य धरि

मैथिली गद्यक हास्य-परम्पराक एक स्रोत लोककथन, प्रहसन, बातचीत आ सामाजिक आचारक विसंगतिसभ अछि। लोककहबीक अर्थक चर्चा करैत कुमार पवनक ई रचना एही स्रोतसँ ऊर्जा लैत अछि। मुदा एकर केन्द्र केवल रूढ़ लोकाचार वा गृहस्थ-जीवनक हँसी नहि अछि; शिक्षित समाजमे पदक लोभ, विश्वविद्यालयक प्रक्रियासँ उत्पन्न प्रतिष्ठा आ आधुनिक सुविधाक आकांक्षा सेहो अछि। एही अर्थमे लोककथन आधुनिक संस्थागत जीवनक परीक्षणक उपकरण बनि जाइत अछि।

ज्योतिरीश्वरक ‘धूर्तसमागम’ सन प्रहसनक परम्परा तथा लोकभाषाक प्रतिवादी हँसीक इतिहास स्मरणीय अछि। तथापि ऐतिहासिक काल, रचनारूप आ उद्देश्यक अन्तर बिना विचारने ओकरा सीधा पूर्वरूप घोषित करब ठीक नहि। पुरान प्रहसनक सामाजिक पात्र आ एतयक प्रथमपुरुष व्यंग्यकारक मानसचित्र मे विधागत भिन्नता अछि। तुलनाक उपयुक्त आधार ‘विरोधाभासकें हँसीमार्फत दृश्य करब’ अछि, ऐतिहासिक प्रभावक अप्रमाणित दावा नहि।

हरिमोहन झाक ‘खट्टर ककाक तरंग’ आ कुमार पवन

आधुनिक मैथिली हास्य-व्यंग्यक चर्चामे हरिमोहन झाक ‘खट्टर ककाक तरंग’ (१९४८) एकटा उपयोगी तुलनात्मक बिन्दु अछि। विदेहक लेखक-परिचयमे एहि व्यंग्य-कृतिक संग हुनकर ‘कन्यादान’ (१९३३) तथा आन कृतिसभक विवरण उपलब्ध अछि। ‘खट्टर ककाक तरंग’क परिचित तर्कशील विनोद-परम्परासँ कुमार पवनक रचना एहि अर्थमे सम्वाद करैत अछि जे दुनूमे स्थापित मान्यता पर प्रश्न उठबैत हास्य महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा पाठक संरचना अलग अछि। हरिमोहन झाक प्रसिद्ध खट्टर कका संवादक मार्फत विचारक प्रबल केन्द्र बनैत छथि; कुमार पवनक कथामे प्रश्नक केन्द्र स्वयं संशयग्रस्त कथावाचक अछि, जे प्रत्येक नव प्रसंगमे अपन पूर्वधारणा हेराइत अछि।

एहि तुलनामे कोनो एक कृतिक ‘प्रभाव’ सिद्ध नहि होइत। एहि लेल पाण्डुलिपि, लेखकक वक्तव्य, क्रमागत प्रकाशन वा प्रत्यक्ष अन्तर्पाठीय साक्ष्य चाही। उपलब्ध प्रमाण केवल विधागत संगति आ

शिल्पगत अन्तरक विवेचनक अनुमति दैत अछि। एहन सीमाबोध साहित्येतिहासकें प्रशंसामूलक वंशावली बनबासँ बचबैत अछि।

उत्तरकालीन मैथिली व्यंग्य आ विधागत निरन्तरता

विदेह पोथी-सूचीमे अशोकक ‘नीक दिनक बाइस्कोप’ (व्यंग्य-संग्रह, २०१८) तथा ‘कथा-पाठ’ (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन, २०२२) दर्ज अछि। एहि प्रविष्टिसभसँ एतबे निश्चित होइत अछि जे मैथिलीमे व्यंग्य आ कथा-आलोचना उत्तरकालमे सेहो स्वतन्त्र कृतिरूपमे उपस्थित अछि। केवल सूचीगत सूचनाक आधारपर एहन ग्रन्थसभक भीतरी कथ्य, शिल्प वा कुमार पवनसँ प्रत्यक्ष सम्बन्धक दावा करब उचित नहि। तथापि एहि अभिलेखक संग ५/६८ अङ्कक कथात्मक व्यंग्यकें राखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे पत्रिका-आधारित व्यंग्य आ पुस्तकाकार व्यंग्यक अध्ययन समानान्तर रूपसँ आवश्यक अछि।

कुमार पवनक ‘पड़ठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’ सेहो विदेहक पुस्तक-सूचीमे सूचीबद्ध छथि। एहि उपलब्धिसँ लेखकक अन्य गद्य-रचनाक अस्तित्वक जानकारी भेटैत अछि; मुदा केवल एहि जानकारी सँ हुनकर समग्र रचना-यात्राक कालक्रम वा कथात्मक परिवर्तनक निष्कर्ष निकालब नहि चाही। लेखकक अन्य प्रकाशित रचनाक प्रत्यक्ष पाठसँ तुलना करब भविष्यक अधिक ठोस शोधक विषय अछि।

साहित्येतिहासक पुनर्पाठ: ‘छोट’ रचनाक महत्त्व

साहित्येतिहासमे बहुधा पुस्तकाकार संग्रह, पुरस्कृत कृति आ प्रतिष्ठित लेखकक केन्द्रमे प्रवृत्तिक कथन तैयार होइत अछि। पत्रिकामे बिखरल आठ प्रसंगक कथात्मक व्यंग्य एहन इतिहासक सीमाकें देखबैत अछि। ई रचना पाठककें जनभाषा, शैक्षणिक संस्थान, सामाजिक अवसरवाद आ नैतिक निर्णायक जटिल सम्बन्धक छोट मुदा सघन दस्तावेज दैत अछि। साहित्यिक इतिहास जखन प्रकाशित पत्रिकाक एहि सूक्ष्म पाठकें सेहो स्वीकार करैत अछि, तखने हास्य-व्यंग्यक बहुस्तरीय सामाजिक भूमिका स्पष्ट होइत अछि।

एहि अध्ययनक प्रस्ताव मूल्यनिर्णयक अतिशयोक्ति नहि, अभिलेखीय अनुशासन अछि। एहि एक रचनाकें मैथिली व्यंग्यक सर्वश्रेष्ठ वा आद्य उदाहरण घोषित करबाक कोनो पाठ-प्रमाण उपलब्ध नहि। एकरा विशिष्ट कहबाक आधार अधिक नापल-तौलल अछि—लोकोक्तिसँ चलैत अर्थ-खोज, आत्मविसंगत कथावाचक, सामाजिक संस्थाक व्यंग्य आ पाठकपर छोड़ल खुलल अन्त। साहित्येतिहासमे एहि रचनाक स्थान एही सत्यापनीय विशेषताक आधारपर निर्धारित होयबाक चाही।

निष्कर्ष

कुमार पवनक ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ एहन कथात्मक व्यंग्य अछि जे अर्थक एकटा छोट प्रश्नसँ शुरू भऽ आधुनिक समाजक बड़ विडम्बनासभ धरि पहुँचैत अछि। अशर्फीक ऊँच मूल्य आ कोइलाक साधारणताक प्रतीक-विरोध केवल वस्तुक तुलना नहि रहैत; ई शिक्षित समाजक ‘बड़प्पन’, आर्थिक सुविधा, प्रतिष्ठित पद, योग्यताक दावा आ नैतिक निर्णयक बहुतेक कसौटीकें सवालक दायरामे लऽ अबैत अछि। कथावाचक अपन अहम् आ असुरक्षा संग पाठकक सोझाँ उपस्थित होइत अछि; भुवन कका लोकबुद्धिक एकटा आयाम जोड़ैत छथि; संस्थागत संसार सफलता आ ज्ञानक अन्तरकें प्रकाशित करैत अछि।

रचनाक सर्वाधिक प्रभावकारी उपकरण ओकर प्रश्नात्मकता अछि। एक अर्थ खोजैत कथावाचक अनेक अर्थक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा अन्ततः पाठककें निर्णायक बनबैत अछि। ई खुलापन, आत्मव्यंग्य आ सामाजिक परिहासक संगति मैथिली आधुनिक गद्यक अध्ययनमे एकरा ध्यानयोग्य बनबैत अछि। किछु प्रसंगगत ढीलापन आ समय-विशेषक सन्दर्भक कठिनाईकें मानि लेबाक बादो कथा मूल्यक उलटबाँसीक तीक्ष्ण आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। एही कारण एहि छोट रचनाकें मात्र विनोदपूर्ण लेख नहि, समाजक मूल्य-व्यवस्थाक बहुस्तरीय विवेचनक रूपमे पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

पइठ, स्मृति आ आत्मलेखन

‘पइठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क साहित्य-सैद्धान्तिक तुलनात्मक समीक्षा

एकटा कथासँ लेखकक साहित्यिक पहिचान

साहित्यिक इतिहासमे कखनो एकटा रचना अपन लेखकक समूचा नामक प्रतिनिधि बनि जाइत अछि। चन्द्रधर शर्मा गुलेरीक अनेक साहित्यिक योगदान रहलाक बादो ‘उसने कहा था’ हुनक नामसँ विशेष रूपेँ जुड़ल प्रसिद्ध कथा अछि। एही अर्थमे ‘पइठ’केँ कुमार पवनक साहित्यिक पहिचानक प्रतिनिधि रचना मानबाक उपमान प्रयुक्त होइत अछि। ई न तँ दुनू कथाक विषय एक होएबाक दावा अछि, न कथाशिल्प, पात्र, अन्त वा संवेदनाक समानता बतएबाक चेष्टा। एकटा कथा लेखकेँ व्यापक प्रसिद्धि दऽ सकैत अछि—एतय तुलनाक आशय केवल एतबे थिक।

एहन प्रतिष्ठामे एकटा सावधानी आवश्यक अछि। कोनो एक कृति पाठकीय स्मृतिमे केन्द्र बनलाक अर्थ ई नहि जे लेखकक आन रचनासभ गौण वा मूल्यहीन छथि। कुमार पवनक ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ अध्ययन करैत स्पष्ट होइत अछि जे हुनक रचना-दृष्टि सामुदायिक भोजक दृश्यसँ बढ़ि शिक्षा-संस्था, आत्मपरीक्षा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विडम्बना धरि फैलल अछि। ‘पइठ’ लेखकक परिचायक कृति भऽ सकैत अछि; मुदा पूरा लेखककेँ बुझबाक लेल समग्र कृतित्वक ओर देखब आवश्यक अछि।

स्वर्ग-पड़ठ आ आत्मलेखनक रिक्तता : दू विरोधाभास

‘पड़ठ’क मूल अर्थ मृतात्माक स्वर्गमे स्थान वा धार्मिक स्वीकृति पएबाक लोकविश्वाससँ जुड़ल अछि। मुदा कथाक नैतिक विडम्बना ई अछि जे कनियाँ काकीक जीवनकालमे हुनकर बेटीक बेटा लेल भोजनक मामूली आग्रह अस्वीकार आ कोलाहलक कारण बनल, जखनकि मृत्यु उपरान्त हुनकर स्वर्ग-पड़ठ लेल विराट भोजक व्यवस्था भेल। एहिसँ शीर्षक परलोकक स्वीकार्यता आ इहलोकक उपेक्षाक बीचक विरोध खोलैत अछि। भोजक पाँति आ सार्वजनिक मान-प्रतिष्ठा एहि मूल विरोधक सहवर्ती दृश्य छथि, ‘पड़ठ’ शब्दक प्राथमिक अर्थ नहि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे भिन्न प्रकारक रिक्तता अछि। एतय मृतात्माक परलोक-स्वीकृतिक बदला जीवित व्यक्ति आत्मसाक्ष्यक प्रश्न अछि। डायरीक पन्ना लिखबाक लेल खुलल अछि, मुदा प्राचार्य अपन अनुभवक निर्णायक अभिलेख दर्ज नहि कऽ पबैत छथि। एक कथा मृत्यु उपरान्त आत्माक पड़ठ लेल सार्वजनिक अनुष्ठान आ जीवनकालक उपेक्षाक अन्तर देखबैत अछि; दोसर कथा जीवित पदाधिकारीक सार्वजनिक छवि आ निजी सत्यक अन्तर। दुनू मे कथित आदर्श आ वास्तविक कर्मक दूरी व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि।

‘पड़ठ’मे परलोकक धार्मिक स्वीकृतिपर सामूहिक बल अछि, मुदा जीवित कनियाँ काकीक छोट माँग अनसुनी रहि जाइत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे सामाजिक पद-स्वीकृति अछि, मुदा निजी जीवनक सत्य लिखल नहि जाइत। पहिल कथा पूछैत अछि जे मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल तत्पर समाज जीवनकालमे मनुष्यक प्रति अपन दायित्व किएक नहि निभबैत; दोसरी पूछैत अछि जे अधिकारसम्पन्न व्यक्ति अपन अनुभवक सच्चा लेखा किएक नहि लिखि पबैत। एहि तुलनामे सार्वजनिक कर्मकाण्ड आ निजी आत्मलेखनक पृथक रूप राखैत एक साझा नैतिक दूरी देखल जाइत अछि।

कथाक समय : पुनस्मरण, वर्तमान आ अधूर भविष्य

कथा-समय घड़ीक सोझ क्रम नहि होइत। स्मृति, आशंका आ अपेक्षा ओकर प्रवाह बदलैत अछि। ‘पड़ठ’मे मृत्योत्तर भोजक वर्तमानक संग कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक अपमान, बेटीक बेटा लेल भोजनक आग्रह, गुँजाक स्थिति आ परिवारक भविष्यक अनिश्चित सम्भावना जुड़ैत अछि। एहि आवागमनसँ मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल कएल आयोजन जीवनकालक नैतिक लेखा-देनसँ अलग नहि रहि पबैत अछि। स्मृति भीड़क बाहर एकटा मानवीय चेहरा आ ओकर अनसुनी माँग सोझाँ अनैत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’क समय आओर विचित्र अछि। डायरी सामान्यतः बीतल क्षणकें लिखित वर्तमानमे बदलैत अछि। मुदा प्राचार्यक जीवन योजनासभ, आशंकासभ आ अगिला दिनक पद-प्रतिष्ठाक गणनामे एतेक व्यस्त अछि जे बितैत क्षण अभिलेख नहि बनि पबैत अछि। भविष्यक चिंता वर्तमानक अनुभवकें निगलैत अछि; परिणामस्वरूप अतीतक साक्ष्य रिक्त रहैत अछि। ई कथानकक मात्र कौशल नहि, सत्ता-संलग्न जीवनक कालबोधपर व्यंग्य अछि।

दुनू दीर्घ-कथामे समयक वापसी अलग रूप लैत अछि। ‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक पीड़ा मृत्यु उपरान्त आयोजित भोजक दावाक जाँच करैत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे वर्तमानक व्यस्तता अतीतक विश्वसनीय अभिलेख रचबाक सम्भावनाकें बाधित करैत अछि। पहिल कथामे अनुष्ठानक वर्तमानकें जीवनकालक स्मृति प्रश्नांकित करैत अछि; दोसरीमे स्मृतिक लिखित स्थान खाली रहि जाइत अछि। दुनू ठाम कालक्रमसँ बेसी निर्णायक ई अछि जे मनुष्य अपन जीवित अनुभवक संग की व्यवहार करैत अछि।

कथावाचकक दूरी आ दृष्टिकोणक नैतिकता

‘पड़ठ’मे भीड़, मृत्योत्तर अनुष्ठान, कनियाँ काकीक जीवन-स्मृति आ परस्पर विरोधी आवाजक संग दृश्य बनैत अछि। एकटा दृष्टिकोण सम्पूर्ण गामक सत्य नहि बनि पबैत। हुनकर साधारण भोजन-माँगक प्रसंगपर उठल विवाद पाठककें समाजक बाहरी धार्मिक आयोजनसँ घरक भीतरी आघात

धरि अनैत अछि। एहि बहुदृष्टिक रचनामे पाठककेँ पात्रक जानकारी आ सीमाकेँ ध्यानमे राखि अर्थ तैयार करए पड़ैत अछि। कथा जखन स्पष्ट निर्णय नहि सुनबैत, तखन ई पाठकक नैतिक भागीदारीक अवसर सेहो अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्राचार्यक आत्म-औचित्य आ हुनक व्यवहारक सार्वजनिक प्रभाव बीच दूरी व्यंग्यक मूल भूमि बनैत अछि। ओ जकरा विवेकसम्मत निर्णय बूझैत छथि, तकर पाछाँ पदक रक्षा, असफलताक भय आ निकट सम्बन्धक लाभ सेहो छिपल रहि सकैत अछि। कथावाचकक व्यवस्था एहन अछि जे प्राचार्यक असुरक्षा पाठकपर खुलैत रहैत अछि, मुदा प्राचार्य स्वयं ओकर पूरा अर्थ नहि पकड़ि पबैत छथि।

दुनू रचनामे दृष्टिकोणक राजनीति महत्त्वपूर्ण अछि। ‘पड़ठ’ पूछैत अछि जे जकरा सामूहिक आवाज दबा दैत अछि, ओकर कथा के कहत; ‘डायरीक खाली पन्ना’ पूछैत अछि जे लिखबाक अधिकार जकरा भेटल अछि, ओ की लिखत आ की टारि देत। साहित्यिक दृष्टि एतय ज्ञानक बँटवारा अछि—कथाकार, पात्र आ पाठक तीनू एकहि बात समान ढङ्गसँ नहि जनैत छथि।

मृत्योत्तर भोज आ महाविद्यालय : सामाजिक संस्थाक मूल्यपरीक्षा

मृत्योत्तर भोज आ महाविद्यालय बाहरी रूपसँ असम्बद्ध संस्थासभ बुझाइत अछि। एकटा लोकधार्मिक मान्यतासँ सम्बद्ध सामुदायिक आयोजन अछि, दोसर आधुनिक शिक्षाक औपचारिक केन्द्र। मुदा दुनू ठाम प्रतिष्ठा, सम्बन्ध, पद आ सामूहिक अनुमोदनक प्रभाव देखल जाइत अछि। ‘पड़ठ’मे प्रश्न अछि जे कनियाँ काकीक जीवनकालक माँगपर कोलाहल आ मृत्युक बादक भोजपर सहमति किएक; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्रश्न अछि जे शिक्षाक घोषित आदर्शकेँ पद, सिफारिश आ संरक्षण कोना प्रभावित करैत अछि। ई अलग सामाजिक प्रक्रियासभक नैतिक तुलनाक आधार अछि।

‘पड़ठ’मे भोजनक वितरण मात्र अन्नक प्रश्न नहि, समय आ उद्देश्यक प्रश्न सेहो अछि—जीवित बेटीक बेटा लेल माँगल कनेक भोजनपर प्रतिरोध आ मृतात्माक पड़ठ लेल प्रचुर भोज। दोसर दिस प्राचार्यक संस्थामे ज्ञानक मूल्य पद-पत्र, राजनीतिक संरक्षण आ सार्वजनिक छवि सँ घेरल अछि। सामाजिक पूँजी आ प्रतीकात्मक प्रतिष्ठाक आलोचनात्मक धारणा एतय उपयोगी अछि; मुदा मृत्योत्तर लोकविश्वासक विशिष्ट धार्मिक आशयकेँ केवल प्रतिष्ठाक गणितमे समेटब उचित नहि।

दुनू कथाकेँ एकहि सामाजिक सूत्रमे विलीन कऽ देब उचित नहि। ‘पड़ठ’क संकटमे जीवितक भूख, मातृस्नेहक अवमानना आ मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठक अनुष्ठानक तीक्ष्ण विरोध अछि; महाविद्यालयक संकटमे नियम, पद आ विवेकक दीर्घ क्षरण। एक ठाम नैतिक असंगति कनेक अन्न बनाम विशाल मृत्योत्तर भोजक रूपमे देखाइत अछि; दोसर ठाम निर्णयक भाषा आ अधिकारक उपयोगमे। एही अन्तरकेँ सुरक्षित राखैत तुलना करब कथा-दृष्टिक सम्मान थिक।

स्त्री-अनुभव आ निजी जीवनक अदृश्य लेखा

‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक पीड़ा मृत्योत्तर भोजक चहल-पहलकेँ भीतरसँ बदलि दैत अछि। जीवनकालमे हुनकर साधारण भोजनक आग्रहपर उठल कोलाहल ममता आ पारिवारिक दायित्वक प्रश्नकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। मृत्युक बाद हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठक निमित्त भव्य आयोजन एहि उपेक्षाक नैतिक विपर्यास अछि। गुँजाक उपस्थितिसँ उत्तराधिकार आ स्त्रीक सामाजिक स्थानक प्रश्न आओर गाढ़ होइत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे संस्थागत सत्ता प्राचार्यक विचारक केन्द्र अछि। स्त्री-पात्रक किछु उपस्थितिसभ पुरुष नायकक आत्मसंशोधनक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा हुनक अपन जीवन पूर्ण विस्तार नहि पबैत। ई रचनाक अर्थवान सीमा सेहो अछि। एक दिस स्त्री-पात्र पुरुषक आत्मचिन्तनमे सहायक बनैत छथि; दोसर दिस एही सहायक भूमिकाकेँ देखैत पाठक पूछि सकैत अछि जे हुनकर स्वतन्त्र संघर्ष कतय अछि।

दुनू कथाक तुलनामे ई प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि जे साहित्य ककर अनुभवकेँ नैतिक केन्द्र बनबैत अछि। ‘पड़ठ’ परलोकक कल्याण लेल कएल सामुदायिक भोजक भीतर जीवित कनियाँ काकीक अनसुनी इच्छाकेँ आवाज दैत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’ पुरुषक संस्थागत जीवनक आत्ममुग्ध सीमा उजागर करैत अछि। एहि दू प्रस्तुतिक बीच मैथिली कथाक लिंग-दृष्टि आ सामाजिक दायित्वपर पुनर्विचारक बाट खुलैत अछि।

हास्य, करुणा आ विडम्बनाक त्रिकोण

कुमार पवनक व्यंग्यक एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता ई अछि जे हास्य अन्ततः असुविधाक अनुभव बनि जाइत अछि। ‘पड़ठ’मे विशाल मृत्योत्तर भोजक बहस, दौड़धूप आ सामाजिक मुद्रा आरम्भमे परिहासक अवसर दैत अछि। मुदा कनियाँ काकीक जीवनकालक छोट भोजन-माँगपर मचल विवाद आ हुनकर मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़ठ लेल कएल प्रचुर प्रबन्धक विरोध सोझाँ अएला पर ई हँसी गम्भीर होइत अछि। कथाकार पाठककेँ केवल सामाजिक विसंगतिपर हँसाए नहि चाहैत; ओ हँसीक कारणोपर विचार करबैत छथि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्राचार्यक आत्मऔचित्य, पदक प्रति मोह, सम्भावित निन्दाक भय आ बाहरी संरक्षणक जटिल खेल हास्य उत्पन्न करैत अछि। मुदा एहि हास्यक भीतरे शिक्षा-संस्थाक भरोसा खोएबाक संकट अछि। पाठक जखन हँसैत अछि, तखन ओहि संग ई प्रश्न उठैत अछि जे संस्थाक निर्णयक नैतिक आधार कोना क्षीण भेल।

दुनू कथामे करुणा आ हास्य एक-दोसराक विरोधी भाव नहि अछि। ‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक जीवित अवस्थाक उपेक्षा जखन हुनकर मृत्युक बादक स्वर्ग-पड़ठक भोजसँ टकराइत अछि, तखन विडम्बना करुण अर्थ ग्रहण करैत अछि। महाविद्यालयक अधिकार आ प्राचार्यक भीतरी आशंकाक दूरी ‘डायरीक खाली पन्ना’मे हँसीक संग असुरक्षा उत्पन्न करैत अछि। ई करुणा पाठककेँ तात्कालिक भावनासँ उठाकय न्याय, उत्तरदायित्व आ संस्थाक मानवीय अर्थपर सोचबा लेल बाध्य करैत अछि।

चित्र, बिम्ब आ दृश्यात्मक स्मृति

‘पड़ठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क प्रकाशित रूपमे रेखाचित्रक उपस्थिति कथाक भाव-जगतकेँ सहारा दैत अछि। आँखि, मुख, शारीरिक आकृति आ ताज-सदृश बिम्ब कतहु देखबाक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि, कतहु सत्ता-आकांक्षाक व्यंग्यात्मक चिह्न। चित्रकेँ केवल सजावट मानब पाठक-अनुभवक एकटा महत्वपूर्ण स्तर छोड़ि देब होएत।

दृश्यात्मक संकेतक प्रभाव गद्यक पद्धतिसँ सेहो जुड़ल अछि। ‘पड़ठ’मे मृत्योत्तर भोजक भीड़, पाँति आ खिड़कीक दृश्य बाहरी अनुष्ठान आ कनियाँ काकीक जीवन-स्मृतिक अलग संसार बनबैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे कार्यालय, महाविद्यालय आ लिखबाक अधूरी इच्छा दृष्टिक नियोजन करैत अछि। पहिल रचनामे दृष्टि प्रश्न करैत अछि जे जीवितक पीड़ा देखल किएक नहि गेल; दोसरामे जे देखल गेल तकरा लिखल किएक नहि गेल। ई सम्बन्ध शीर्षकसभक सांकेतिक शक्ति बढ़बैत अछि।

अन्तक खुलापन आ पाठकीय उत्तरदायित्व

कथाक अन्त केवल घटनाक समाप्ति नहि, ओकर अर्थक नवा आरम्भ सेहो भऽ सकैत अछि। ‘पड़ठ’मे हुनकर आत्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल आयोजित भोज सम्पन्न भऽ जाए तइयो जीवनकालमे हुनकर बेटीक बेटा लेल माँगल अन्नक कारण उठल विवादक नैतिक हिसाब शेष रहैत अछि। भव्य अनुष्ठानक दावाक सामना जीवित व्यक्ति संग कएल व्यवहारसँ होइत अछि। एहि द्वन्द्वक स्मृति पाठकक मनमे ठहरि जाइत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्राचार्य अपन जीवनक सच्चा लेखा तैयार नहि कऽ पबैत छथि। शीर्षक पुनः कथा-अन्तमे अर्थवान भऽ उठैत अछि: जतेक अनुभव जमा भेल, ततेक लिखबाक नैतिक कठिनाई सेहो बढ़ल। अन्तिम रिक्तता पात्रक विफलताक संग पाठकक प्रश्न बनैत अछि—हम अपन सार्वजनिक निर्णयक निजी हिसाब कखन आ कोना दैत छी?

‘पड़ठ’क अन्त मृत्योत्तर भोजक सम्पन्नतासँ बेसी जीवनकालमे कनियाँ काकीक प्रति अधूरा सामाजिक दायित्व स्मरणमे छोड़ैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे आत्मलेखनक रिक्तता प्राचार्यक जीवन-संघर्षक नैतिक परिणाम बनैत अछि। एक ठाम परलोकक स्वीकृतिपर बल दैत अनुष्ठानक सोझाँ जीवनकालक उपेक्षा अछि, दोसर ठाम सार्वजनिक अधिकारक सोझाँ आत्मसाक्ष्यक अभाव। दुनू कथा पाठककेँ अन्तिम नैतिक निर्णय स्वयं गढ़बाक चुनौती दैत अछि।

कथात्मक बहुस्वरता आ सामाजिक भाषा

समाजक भाषा एकरूप नहि। ‘पड़ठ’मे भोजक आयोजक, आमन्त्रित, उपेक्षित, परिवारक सदस्य आ भीड़क प्रतिक्रिया सभ अलग जीवनस्थितिसँ उभरैत अछि। एहन बहुस्वरतामे कथाकारक एकल निर्णय स्वतः केन्द्र नहि रहैत। पाठकक सोझाँ सामाजिक वाणीसभक तनाव बनल रहैत अछि।

‘डायरीक खाली पन्ना’मे आदेश, आश्वासन, अफवाह, आरोप, संरक्षण आ निजी संशयक भाषा एक-दोसरकेँ काटैत अछि। प्रशासनिक शब्द आ निजी भयक मिलनमे विडम्बनाक ऊर्जा अछि। संस्थागत संवाद सत्यक निर्विवाद अभिलेख नहि, पदक रक्षा आ शक्ति-सन्तुलनक साधन बनि जाइत अछि।

दुनू कथा भाषा-विज्ञानक शुष्क उदाहरण नहि, जीवनक टकरावक रचनात्मक प्रस्तुति अछि। सामाजिक भाषा कोन अनुभवकेँ प्रतिष्ठा दैत अछि आ कोन अनुभवकेँ किनार करैत अछि, से कथाक दृश्य आ संवादमे निरन्तर व्यक्त होइत अछि। मैथिली लोकभाषाक लचक एहि बहुवचनकेँ जीवित बनबैत अछि।

प्रतीकात्मक पूँजी, भूख आ नैतिकता

प्रतिष्ठा कखनो पदवी, कखनो निमन्त्रण, कखनो आसन, कखनो प्रभावशाली व्यक्तिक निकटता बनि जाइत अछि। ‘पड़ठ’मे मृतात्माक स्वर्ग-पड़ठ लेल विशाल भोज सामाजिक प्रतिष्ठाक अभिव्यक्ति सेहो बनि पड़ैत अछि, मुदा काकीक जीवनकालमे बेटीक बेटा लेल माँगल कनेक

अन्नपर विवाद ओकर मूल्यक सीमा खोलैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे संस्था अपन घोषित शैक्षिक उद्देश्यक बदला पदक प्रतीकात्मक चमकमे फँसैत अछि।

विरोधाभास ई अछि जे समाजक आदरणीय मानल जाएबला व्यवस्थासभ—मृत्योत्तर धार्मिक भोज आ शिक्षण-संस्था—मानवीय मर्यादा सुरक्षित राखबाक अवसर सेहो छथि आ ओकर अवमूल्यनक स्थल सेहो। कुमार पवन धार्मिक कर्मकाण्डक श्रद्धा आ जीवितक प्रति मानवीय दायित्वक अन्तर दिखबैत छथि; दोसर कथामे शैक्षिक प्रतिष्ठा आ नैतिक सत्यक अन्तर। दुनू व्यवस्थाकेँ एकरेखीय उपदेशमे विलीन नहि कएल जा सकैत।

एतय नैतिकता व्यक्तिगत सदाचार भरि नहि अछि। जीवित कनियाँ काकीक बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन देबाक दायित्व आ मृत्युक बाद हुनकर आत्माक पड़ल लेल भोज करबाक सामाजिक इच्छा बीचक अन्तर नैतिक जाँच माँगैत अछि। ओहिना न्यायपूर्ण शैक्षिक निर्णय सेहो सार्वजनिक दायित्व अछि। एहि विस्तृत नैतिक अर्थक कारण दुनू रचनाक सामाजिक महत्त्व टिकाउ बनैत अछि।

समानताक सीमा आ रचनासभक स्वतन्त्र उपलब्धि

‘पड़ल’क मृतात्माक स्वर्ग-स्वीकृतिक रूपक ‘डायरीक खाली पन्ना’मे यथावत् उपस्थित नहि अछि। पहिल कथा धार्मिक अनुष्ठान, समुदाय आ परिवारक अनेक केन्द्र बनबैत अछि; दोसरी कथा संस्थाक भीतर एकटा महत्वाकांक्षी व्यक्तिक विकल मनोभूमिकेँ प्रधानता दैत अछि। पहिलमे जीवितक भूख, ममता, मृत्यु आ परलोकक आशा; दोसरीमे पद, प्रचार, नियम आ आत्मलेखन। दुनूकेँ समान सामाजिक व्यंग्य कहि देबासँ ई अन्तर भेटि जाएत।

फेरो शीर्षकक व्यंजना, अधूरा प्रश्न, सार्वजनिक छविक मोह आ मनुष्यक मर्यादाक चिन्ता दुनूकेँ एक साझा कथा-दृष्टिसँ जोड़ैत अछि। सामाजिक दृश्य जतेक विस्तार पबैत अछि, कथाक नैतिक प्रश्न ततेक अन्तर्मुखी होइत अछि। ‘पड़ल’मे कनियाँ काकीक जीवनकालक मामूली अन्नक आवश्यकता आ हुनकर मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़लक भोजक विरोध, आ दोसर कथामे प्राचार्यक सत्य

लिखबाक असमर्थता—ई भिन्न संकट होइतहुँ पाठककेँ घोषणाक अपेक्षा कर्मक मूल्यपर सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि।

‘पड़ठ’क प्रतिनिधि कृति होयबाक महत्त्व ओकर स्वतन्त्र मैथिली सामाजिकता, कनियाँ काकीक स्त्री-अनुभव, जीवित अवस्थाक उपेक्षा आ मृत्योत्तर भोजक विडम्बना तथा खुलल नैतिक प्रश्नमे निहित अछि। एकटा कथा लेखकक सार्वजनिक पहिचान बनि सकैत अछि; मुदा कृतित्वक आकलन ओकरा एकटा रचनामे बन्द नहि करबाक चाही। ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ आन रचनाक संग पढ़ला पर कुमार पवनक सामाजिक आलोचना आओर विस्तृत रूपेँ बुझाईत अछि। हुनक साहित्यिक उपलब्धि कोनो दोसर कथाकारक अनुकरणमे नहि, अपन समाजक भीतरी असंगतिकेँ कथा-सौन्दर्यमे बदलामे अछि।

समाहार : कथा-कर्मक साझा संरचना

तीनू कृतिक समीक्षासँ स्पष्ट होइत अछि जे कुमार पवनक कथा-जगतमे बाह्य व्यवहार आ भीतरी अभिप्राय बीच दूरी एकटा स्थायी चिन्ता अछि। ‘पड़ठ’मे कनियाँ काकीक जीवनकालमे बेटीक बेटा लेल कनेक अन्नक माँगपर हंगामा, मुदा मृत्युक बाद स्वर्ग-पड़ठ लेल विशाल भोज; ‘डायरीक खाली पन्ना’मे शैक्षिक प्रतिष्ठा आ आत्मसाक्ष्यक रिक्तता; ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’मे लोकोक्तिक सहज ज्ञान आ सामाजिक पदलोलुपताक विडम्बना—सभ अलग प्रसंगमे एकहि प्रश्न उठबैत अछि: समाज जे मूल्य कहैत अछि, ओकर पालन कोना करैत अछि?

‘पड़ठ’मे सामुदायिक मृत्योत्तर भोजक विखण्डित आवाजक संग कनियाँ काकीक जीवनकालक अपमान आ ममताक स्मृति जुड़ैत अछि। ‘डायरीक खाली पन्ना’मे प्रशासनिक सफलता आ असुरक्षित आत्मचेतना एक-दोसरकें उघारैत अछि। ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’मे लोकोक्तिक अर्थ खोजबाक प्रक्रिया पाठकक अपन मूल्य-निर्णयकें अस्थिर करैत अछि। एहि तीनू शिल्पमे अलग-अलग लय अछि—अनुष्ठान आ जीवनक विरोधसँ उपजल सामुदायिक व्यंग्य, संस्थागत मनोव्यंग्य आ प्रत्यक्ष पाठक-सम्बोधन।

व्यंग्यक सर्जनात्मक सफलता एतए हँसीक तीक्ष्णतामे मात्र नहि, करुणाक उपस्थितिमे अछि। सामाजिक सम्बन्धक अव्यवस्थाकें देखि पाठककेंवल दोषी खोजबाक सरल सन्तोष नहि पबैत; ओकरा अपन व्यवहार, सम्मानक कल्पना आ मौनक भूमिका पर सेहो विचार करए पड़ैत अछि। आधुनिक मैथिली कथासाहित्यमे ई आलोचनात्मक पाठकीयता कुमार पवनक कथा-लेखनक विशिष्ट योगदानक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

रचनासभक सीमा सेहो अछि। कतिपय विस्तृत प्रसंग कथाक गति धीमा करैत अछि; किछु पात्र, विशेषतः स्त्रीक स्वतन्त्र अनुभव, आओर विस्तार माँगैत छथि। तथापि रचनाक मौलिकता अक्षुण्ण रहैत अछि : ‘पड़ठ’, ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’—तीनू समाजक पैघ प्रश्नकें साहित्यिक स्वर दैत अछि।

सन्दर्भग्रन्थ आ उल्लेखित आलोचना

01. कुमार पवन। ‘पड़ठ’ (दीर्घ कथा)। अंतिका, अप्रैल-जून २००८।
02. कुमार पवन। ‘डायरीक खाली पन्ना’ (दीर्घ-कथा)। अंतिका, अक्टूबर-दिसम्बर २००८।
03. कुमार पवन। ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ (कथात्मक व्यंग्य)। संकल्प, अङ्क-संकेत ५/६८।
04. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी। ‘उसने कहा था’। सरस्वती, १९१५।
05. हरिमोहन झा। खट्टर ककाक तरंग।
06. हरिमोहन झा। कन्यादान।
07. ज्योतिरीश्वर ठाकुर। धूर्तसमागम।
08. फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’। ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’। विदेह, अङ्क ५०, २०१०।
09. योगानन्द झा। ‘मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा’। विदेह, अङ्क ७६, २०११।
10. दुर्गानन्द मण्डल। ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’। विदेह, अङ्क ११६, २०१२।
11. रमेश रञ्जन। ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत — चौआरि’। विदेह, अङ्क १२६, २०१३।
12. गजेन्द्र ठाकुर। ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४७, २०२६।
13. अशोक। नीक दिनक बाइस्कोप। २०१८।
14. अशोक। कथा-पाठ। २०२२।
15. विदेह। ‘पोथी’ : मैथिली साहित्यक पुस्तक-अभिलेख।
16. विदेह। ‘गद्य’ : रचनाकारवार गद्य-कृति आ आलोचनाक सूची।
17. बाख्तिन, मिखाइल। The Dialogic Imagination: Four Essays। १९८१।
18. जेनेट, जेरा। Narrative Discourse: An Essay in Method। १९८०।
19. रिकर, पॉल। Time and Narrative। १९८४-१९८८।
20. बुर्दियो, पियेर। The Field of Cultural Production। १९९३।

नित नवल कुमार पवन

तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन
आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन

‘पइठ’

‘डायरीक खाली पन्ना’

‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’



विदेह मुख्य साइट

www.videha.co.in



विदेह ई-जर्नल

videha-ejournal.github.io/videha